bjpkamaljyoti@gmail.com www.up.bjp.org

संवत 2078 युगाब्द 5123 कुल पृष्ठ –32 अंक – 16

वर्तमान

कमल ज्योति

तू न थकेगा कभी,

तू न रुकेगा कभी,

तू न मुड़ेगा कभी,

कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ,

लक्ष्य, प्रण, पथ अन्त्योदय।

₹10

भारतीय जनता पार्टी, उत्तर प्रदेश
विधायक दल बैठक
मार्च 2022

वर्तमान
कमल ज्योति

संरक्षक
श्री स्वतंत्र देव सिंह
सम्पादक
अरुण कान्त त्रिपाठी
प्रबन्ध सम्पादक
राजकुमार
प्रकाशक
प्रो0 श्याम नन्दन सिंह
पृष्ठ संयोजक
ओम प्रकाश पंडित

कार्यालय

कमल ज्योति, 7–विधानसभा मार्ग
लखनऊ – 1
फोन :– 0522–2200187
फैक्स :– 0522–2612437

Email-
bjpkamaljyoti@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेखों से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं

मुद्रक

नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र,
राजेन्द्र नगर, लखनऊ–4

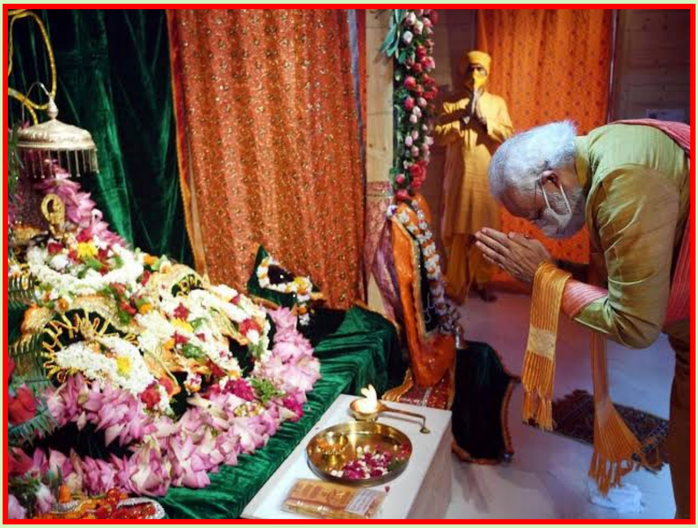

नव संवत्सर
की
हार्दिक शुभकामनाएं

सम्पादकीय

चरैवेती की साधना......

उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के पं0अटल बिहारी इकाना स्टेडियम में लघु भारत का दृश्य! राजनेता, पत्रकार, विद्वान, साधु, संत, कलाकार सभी तपती धूप में साधना रत थे। चहुओर उल्लास था, अवसर था योगी मंत्रीमण्डल के शपथ ग्रहण का, शुभ चिन्तक, समर्थकों, मार्ग दर्शकों की हार्दिक बधाई, शुभकामनाओं के बीच योगी जी ने शपथ लिया तो साथ में योगी टीम का भी शपथ हुआ। एक तरफ उल्लास था तो दूसरी तरफ नेतृत्व वर्ग के मन में चल रहा था लोगों की आशा के अनुरूप संकल्प कैसे त्वरित गति से पूरे किये जाए।

चुनाव काल में कड़क प्रशासन के लिए ''बुलडोजर बाबा'' के नाम से प्रसिद्धी पाये बाबा शपथ के साथ ही जिस प्रकार से अन्त्योदय वर्ग की चिन्ता करते हुए 3+3 माह के लिए राशन की व्यवस्था को आगे बढ़ाया। सोंच विचार कर मंत्रीमण्डल में कार्य विभाजन हुआ तो मंत्रीयों द्वारा सुचिता मित्व्ययिता, कर्मठता पूर्वक जनहितकारी कार्यों में जुट गये। ये उत्तर प्रदेश को सर्वोत्तम प्रदेश बनाने के शुभ संकेत हैं। दूसरी तरफ बाबा टीम के शपथ लेते ही अपराधी प्रदेश छोड़कर भाग खड़े हुए। या जेलों में आत्मसमर्पण कर जा रहे हैं। सरकार अपने कार्य में मनोयोग से जुट गयी है। तो दूसरी तरफ संगठन भी अपनी सामान्य संगठनात्मक गतिविधियों के तरफ लौट आया है।

6 अप्रैल स्थापना दिवस से लेकर 14 अप्रैल बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर की जयन्ती तक कार्यकर्ता, सम्पर्क, मिलन, प्रबोधन आदि के कार्यों को गति देने मे जुट गये हैं। सत्ता-संगठन का अद्भुत समन्वय उसके सूत्रधार महामंत्री सुनील बंसल जी चुनाव के बाद विश्राम कर रहे कार्यकर्ताओं को पुनः ''सेवा ही संगठन'' के सूत्र से आम जनता के बीच जाकर उनके सुख-दुःख में सहभागी होने का कार्य सौप दिया है।

उत्तर प्रदेश करोना काल में जो अव्यवस्थित सा दिखता था उसको पुनः विकसित प्रदेश बनाने में सत्ता, सरकार, संगठन, प्राण, प्रण से जुट गये है।

आगामी भारतीय नव वर्ष ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया'' के संकल्प के साथ मोदी जी के सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास के मूल मंत्र के साथ एकात्म मानववाद की नीतियों के साथ लक्ष्य अन्त्योदय, प्रण अन्त्योदय, पथ अन्त्योदय के संकल्प को साकार करती दिख रही है।

नये भारत नये उत्तर प्रदेश के निर्माण में सबका प्रयास सफल हो यही प्रभु से प्रार्थना ।

akatri.t@gmail.com

सर्वे भवन्तु सुखिनः की संकल्पी योगी सरकार

उत्तर प्रदेश में ऐतिहासिक रूप से तीन दशक बाद भाजपा के योगी जी ने पुनः सत्ता में दूसरी वापसी किया। जनहितकारी ''अन्त्योदय'' की प्राथमिकता सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका सहभाग से कार्य करती दीख रही है अपने संकल्प पत्र के अनुपालन के लिए दृढ़ संकल्पी दिख रही है, सबसे पहला निर्णय अगले तीन माह तक 15 करोड़ जरूरत मन्दों को राशन का फेसला किया तो दूसरी तरफ नरेन्द्र मोदी जी ने 6 माह तक मुफ्त राशन की घोषणा श्री अभिनन्दनीय है। उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ जी ने योजना भवन में मुख्य सचिव, अध्यक्ष राजस्व परिषद, कृषि उत्पादन आयुक्त, अपर मुख्य सचिव, प्रमुख सचिव तथा सचिवगण के साथ बैठक कर महत्वपूर्ण निर्देश दिये जिससे

मा0 प्रधानमंत्री जी के विजन के अनुरूप 'नये भारत का नया उत्तर प्रदेश' आकार ले रहा है। इस कार्य को और गति प्रदान की जाए।

पहले कार्यकाल में हमारी चुनौती कुव्यवस्था से थी। विगत 05 वर्षों में सुशासन की स्थापना हुई है। आगामी 05 वर्षों में हमारी प्रतिस्पर्धा पहले कार्यकाल के कार्यों से होगी। अब सुशासन को और सुदृढ़ करने के लिए स्वयं से हमारी प्रतिस्पर्धा प्रारम्भ होगी। सुशासन की स्थापना को और मजबूती के साथ आगे बढ़ाना होगा।

'लोक कल्याण संकल्प पत्र–2022' के सभी संकल्प बिन्दुओं को 05 वर्षों में लक्ष्यवार एवं समयबद्ध ढंग से पूरा किया जाए।

प्रत्येक विभाग 100 दिन, 06 माह तथा वार्षिक लक्ष्य का निर्धारण करते हुए उसकी पूर्ति के लिए अहर्निश प्रयास करे।

भ्रष्टाचार को लेकर हमारी सरकार की शुरू से जीरो टॉलरेंस नीति रही है। इसे प्रभावी ढंग से जारी रखा जाए।

शासन की योजनाओं की आमजन तक पहुंच को और व्यापक बनाने के लिए तकनीक का व्यापक स्तर पर समावेश किया जाए।

यह सुनिश्चित किया जाए कि सभी अधिकारी व कर्मचारी समय से कार्यालय में उपस्थित होकर कार्यों को प्रभावी ढंग से सम्पादित करें। कार्यालय की व्यवस्था ऐसी हो, जिससे आम जनता को सुविधा हो।

कार्यहित में त्वरित निर्णय लें। पत्रावलियां लंबित नहीं रहनी चाहिये। पत्रावलियों का निस्तारण समय–सीमा में किया जाए।

पत्रावलियों के निराकरण की स्थिति की वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा नियमित समीक्षा की जाए।

'ई'–ऑफिस' को पूरी तरह लागू करने की कार्य योजना तैयार की जाए। सभी विभागों में सिटिजन चार्टर लागू किया जाए। विभागों के समस्त कार्यों का डिजिटलाइजेशन किया जाए।

प्रदेश सरकार ने महिला पुलिस कर्मियों की संख्या में अभूतपूर्व बढ़ोत्तरी की है। महिला पुलिस कर्मियों को फील्ड कार्यों से जोड़ा गया है। इस सन्दर्भ में महिला बीट अधिकारियों की तैनाती की गयी है, जो ग्राम स्तर पर समस्याओं के निस्तारण के साथ ही विभिन्न योजनाओं की जन जागरूकता का कार्य भी सम्पादित कर रही है।

राजस्व, पंचायतीराज और ग्राम्य विकास के ग्रामस्तरीय कर्मियों द्वारा ग्राम प्रधान के समन्वय से ग्राम चौपाल आयोजित की जाए। इसके माध्यम से ग्रामीण जनता की स्थानीय समस्याओं का समाधान कराया जाए।

भारत सरकार से प्राप्त होने वाले पत्रों का उत्तर, पत्र प्राप्ति के एक सप्ताह में अनिवार्य रूप से प्रेषित कर दिया जाए।

जनपदों के नोडल अधिकारीगण अपने जिले के विकास कार्यों की स्थिति की नियमित समीक्षा करें। नोडल अधिकारीगण अपने जनपद के प्रभारी मंत्री के साथ प्रत्येक माह जिले का भ्रमण कर योजनाओं का क्रियान्वयन मौके पर परखें। जनपद प्रवास के दौरान जनता से संवाद कायम कर फीडबैक प्राप्त करें और अपनी रिपोर्ट मुख्यमंत्री कार्यालय को दें।

वित्तीय वर्ष 2021–2022 समापन की ओर है। सभी विभाग अपने–अपने वार्शिक लक्ष्यों की पूर्ति की स्थिति की गहन समीक्षा कर लें। बजट के सदुपयोग का मूल्यांकन करते हुए वित्तीय स्वीकृतियों के सापेक्ष उनके व्यय की स्थिति की पड़ताल कर लें। प्रत्येक स्थिति में वित्तीय नियमों के अनुरूप कार्यवाही की जाए। यदि भारत सरकार के स्तर से किसी योजना का केन्द्रांश जारी नहीं हो सका है तो अविलम्ब केन्द्र से संपर्क कर उसे जारी कराएं।

उत्तर प्रदेश ने कोविड–19 को सफलतापूर्वक नियंत्रित किया है। हमारे राज्य ने कोविड प्रबन्धन का सफल मॉडल प्रस्तुत किया है, जिसकी विभिन्न स्तर पर सराहना हुई हइे। वर्तमान में कोरोना की तीसरी लहर पूरी तरह नियंत्रित हैं। इसके बावजूद हमें सतर्कता और सावधानी बनाये रखनी होगी।

राजस्व संग्रह का पूरा ध्यान दिया जाए। विकास एवं जनकल्याणकारी योजनाओं के वित्त पोषण के लिए ऐसा किया जाना आवश्यक है। टैक्स का भुगतान करने वालों के लिए प्रक्रिया को सरल बनाया जाए।

भारत सरकार के वर्ष 2022–23 के आम बजट तथा लोक कल्याण संकल्प पत्र–2022 को ध्यान में रखते हुए प्रदेश सरकार का वर्ष 2022–23 का बजट तैयार किया जाए।

हमारे समक्ष उत्तर प्रदेश को देश का नम्बर–1 राज्य और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को देश की नम्बन–1 अर्थव्यवस्था बनाने का लक्ष्य है। टीम वर्क और अन्तर्विभागीय समन्वय से भविष्य का रोडमैप तैयार किया जाए। इस कार्य के लिए टीम यू0पी0 को पूरी प्रतिबद्धता के साथ लगना होगा।

प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 01 ट्रिलियन यू0एस0 डॉलर बनाने के लिए 10 प्राथमिक सेक्टरों को चिन्हित किया जाए। इसकी नियमित समीक्षा की जाए। मुख्य सचिव द्वारा साप्ताहिक समीक्षा तथा स्वयं मुख्यमंत्री द्वारा इस सम्बन्ध में पाक्षिक समीक्षा की जाएगी।

विभिन्न विभाग रिक्त पदों पर भर्ती से जुड़े मामलों पर तेजी से कार्यवाही को आगे बढ़ाएं।

प्रदेश सरकार द्वारा महिलाओं एवं बालिकाओं की सुरक्षा, सम्मान और स्वावलम्बन के लिए मिशन संचालित किया गया। हमारे लिए यह अत्यन्त गौरवपूर्ण है कि भारत सरकार द्वारा भी महिलाओं के कल्याण एवं सशक्तीकरण के लिए मिशन शक्ति प्रारम्भ किया गया।

विभिन्न लाभार्थीपरक योजनाओं की गतिविधियों को 24 घण्टे के अन्दर सी0एम0 डैशबोर्ड–दर्पण पोर्टल में अंकित किया जाए।

मानव सम्पदा पोर्टल पर राज्य सरकार के सभी कार्मिकों का सेवा सम्बन्धी विवरण अंकित किया जाए।

इन प्राथमिक निर्णयों से मोदी योगी सरकार का सुशासन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, समग्र विकास का संकल्प परिलक्षित हो रहा है। जिसे जनता शुभ संकेत मान रही है। इसके साथ ही बेहतर कानून व्यवस्था, विकास योजनओं का क्रियान्वयन, प्रदेश का ढांचागत विकास से ही भारत की बड़ी अर्थव्यवस्था वाला उत्तर प्रदेश हो जिससे भारत महाशक्ति बनेगा। नया उत्तर प्रदेश, नया भारत के लिए जन–जन को बधाई ....।

योगी आदित्यनाथ

योगी आदित्यनाथ जी के घर का नाम अजय सिंह बिष्ट है। गोरखपुर के प्रसिद्ध गोरखनाथ मन्दिर के महन्त तथा राजनेता हैं एवं वर्तमान में उत्तर प्रदेश के मुख्यमन्त्री हैं। इन्होंने 19 मार्च 2017 को प्रदेश के विधान सभा चुनावों में भारतीय जनता पार्टी की बड़ी जीत के बाद यहाँ के 21वें मुख्यमन्त्री पद की शपथ ली। इस बार 2022 में गोरखपुर शहर से विधायक निर्वाचित हो दूसरी बार मुख्यमंत्री बने हैं। वे 1998 से 2017 तक भारतीय जनता पार्टी के टिकट पर गोरखपुर लोकसभा क्षेत्र का प्रतिनिधित्व किया और 2014 लोकसभा चुनाव में भी यहीं से सांसद चुने गए थे। आदित्यनाथ गोरखनाथ मन्दिर के पूर्व महन्त अवैद्यनाथ के उत्तराधिकारी हैं। ये हिन्दू युवाओं के सामाजिक, सांस्कृतिक और राष्ट्रवादी समूह हिन्दू युवा वाहिनी के संस्थापक भी हैं, तथा इनकी छवि एक प्रखर राष्ट्रवादी नेता की है।

जून 1972 को उत्तराखण्ड के पौड़ी गढ़वाल जिले स्थित यमकेश्वर तहसील के पंचुर गाँव के एक गढ़वाली क्षत्रिय परिवार में योगी आदित्यनाथ का जन्म हुआ। इनके पिता का नाम आनन्द सिंह बिष्ट है जो एक फॉरेस्ट रेंजर थे तथा इनकी मां का नाम सावित्री देवी है। 20 अप्रैल 2020 को उनके पिता आनन्द सिंह बिष्ट की मृत्यु हो गई। अपनी माता–पिता के सात बच्चों में तीन बड़ी बहनों व एक बड़े भाई के बाद ये पांचवें थे एवं इनसे और दो छोटे भाई हैं।

इन्होंने 1977 में टिहरी के गजा के स्थानीय स्कूल में पढ़ाई शुरू की व 1987 में यहाँ से दसवीं की परीक्षा पास की। सन् 1989 में ऋषिकेश के श्री भरत मन्दिर इण्टर कॉलेज से इन्होंने इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की। 1990 में ग्रेजुएशन की पढ़ाई करते हुए ये अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से जुड़े। 1992 में श्रीनगर के हेमवती नन्दन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय से इन्होंने गणित में बीएससी की परीक्षा पास की। कोटद्वार में रहने के दौरान इनके कमरे से सामान चोरी हो गया था जिसमें इनके सनत प्रमाण पत्र भी थे। इस कारण से गोरखपुर से विज्ञान स्नातकोत्तर करने का इनका प्रयास असफल रह गया। इसके बाद इन्होंने ऋषिकेश में पुनः विज्ञान स्नातकोत्तर में प्रवेश तो लिया लेकिन राम मंदिर आंदोलन का प्रभाव और प्रवेश को लेकर परेशानी से उनका ध्यान अन्य ओर बंट गया। 1993 में गणित में एमएससी की पढ़ाई के दौरान गुरु गोरखनाथ पर शोध करने ये गोरखपुर आए एवं गोरखपुर में अपने चाचा महंत अवैद्यनाथ के शरण में ही चले गए और दीक्षा ले ली। 1994 में ये पूर्ण संन्यासी बन गए, जिसके बाद इनका नाम अजय सिंह बिष्ट से योगी आदित्यनाथ हो गया।

12 सितंबर 2014 को गोरखनाथ मंदिर के पूर्व महन्त अवैद्यनाथ के निधन के बाद इन्हें यहाँ का महंत बनाया गया। 2 दिन बाद इन्हें नाथ पंथ के पारंपरिक अनुष्ठान के अनुसार मंदिर का पीठाधीश्वर बनाया गया।

राजनैतिक जीवन

सबसे पहले 1998 में योगी आदित्यनाथ गोरखपुर से भाजपा सांसद प्रत्याशी के तौर पर चुनाव लड़े और जीत गए। तब इनकी उम्र केवल 26 वर्ष थी। वे बारहवीं लोक सभा (1998–99) के सबसे युवा सांसद थे। 1999 में ये

गोरखपुर से पुनः सांसद चुने गए।

अप्रैल 2002 में इन्होंने हिन्दू युवा वाहिनी बनायी। 2004 में तीसरी बार लोकसभा का चुनाव जीता। 2009 में ये 2 लाख से ज्यादा वोटों से जीतकर लोकसभा पहुंचे। 2017 में विधानसभा चुनाव में बीजेपी के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने योगी आदित्यनाथ से पूरे राज्य में प्रचार कराया।

19 मार्च 2017 में उत्तर प्रदेश के बीजेपी विधायक दल की बैठक में योगी आदित्यनाथ को विधायक दल का नेता चुनकर मुख्यमंत्री पद सौंपा गया।

आदित्यनाथ के भारतीय जनता पार्टी के साथ रिश्ता पुराना है। वह विद्यार्थी जीवन में विद्यार्थी परिषद के सदस्य रहे। संघ के उसी समय स्वयं सेवक भी बन गये। वह पूर्वी उत्तर प्रदेश में अच्छा खासा प्रभाव रखते हैं। इससे पहले उनके पूर्वाधिकारी तथा गोरखनाथ मठ के पूर्व महन्त, महन्त अवैद्यनाथ भी भारतीय जनता पार्टी से 1991 तथा 1996 का लोकसभा चुनाव जीत चुके हैं।

लोकसभा चुनावों में प्रदर्शन

योगी आदित्यनाथ सबसे पहले 1998 में गोरखपुर से चुनाव भाजपा प्रत्याशी के तौर पर लड़े और जीत दर्ज की। लेकिन उसके बाद हर चुनाव में उनका जीत का अंतर बढ़ता गया और वे 1999, 2004, 2009 तथा 2014 में सांसद चुने गए।

मुख्यमंत्री निर्वाचन

योगी आदित्यनाथ ने रविवार, 19 मार्च 2017 को उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री के तौर पर शपथ ली। शपथ समारोह लखनऊ के कांशीराम स्मृति उपवन में हुआ। इनके साथ दो उप–मुख्यमंत्री भी बनाये गए। पाँच वर्षो के सुशासन के कारण उत्तर प्रदेश की जनता ने कई भ्रांतियों को तोड़ते हुए दुबारा सत्ता में वापसी किया। चुनाव के दौरान बाबा की जनहितकारी छवि, कठोर अनुशासन, कुशल राजनैतिक क्षमता ने उन्हें 2022 में उत्तर प्रदेश का हीरो बना दिया विपक्षियों की बुलडोजर बाबा की दी गयी छवि को जनता ने हाथो–हाथ लिया बाबा अन्याय, अत्याचार, के खिलाफ खड़े बुलडोजर बाबा के रूप में पुर्ण बहुमत से जीतकर जनता के सेवा में पुनः आ गये।

6 अप्रैल स्थापना दिवस विशेष

भाजपा सिंहावलोकन ....

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में, वैश्विक राजनीतिक पटल पर सबसे बड़े राजनैतिक पार्टी भारतीय जनता पार्टी आज एकात्म मानववादी दल के रूप में जन सेवा ''अन्त्योदय'' की साधना में लगी है। जो भारत को एक सुदृढ़, समृद्ध एवं शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में विश्व पटल पर स्थापित करने के लिए कृतसंकल्प है। भारत को एक समर्थ राष्ट्र बनाने के लक्ष्य के साथ भाजपा का गठन 6 अप्रैल, 1980 को नई दिल्ली के कोटला मैदान में आयोजित एक कार्यकर्ता अधिवेशन में किया गया, जिसके प्रथम अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी निर्वाचित हुए। अपनी स्थापना के साथ ही भाजपा ने अंतर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय एवं लोकहित के विषयों पर मुखर रहते हुए भारतीय लोकतंत्र में अपनी सशक्त भागीदारी दर्ज की तथा

भारतीय राजनीति को नए आयाम दिए। कांग्रेस की एकाधिकार वाली एक दलीय लोक तान्त्रिक व्यवस्था के रूप में जानी जाने वाली भारतीय राजनीति को भारतीय जनता पार्टी ने दो ध्रुवीय बनाकर एक गठबंधन – युग के सूत्रपात में अग्रणी भूमिका निभाई है। देश में विकास आधारित राजनीति की नींव भी भाजपा ने विभिन्न राज्यों में सत्ता में आने के बाद तथा पूरे देश में भाजपा नीत राजग शासन के दौरान रखी। आज तीन दशक बाद प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में किसी एक पार्टी को देश की जनता ने पूर्ण बहुमत दिया है तथा भारी बहुमत से भाजपा नीत राजग सरकार केन्द्र में विद्यमान है।

हालांकि भारतीय जनता पार्टी का गठन 6 अप्रैल, 1980 को हुआ, परन्तु इसका इतिहास भारतीय जनसंघ से जुड़ा हुआ है। स्वतंत्रता प्राप्ति तथा देश विभाजन के साथ ही देश में एक नई राजनीतिक परिस्थिति उत्पन्न हुई। गांधीजी की हत्या के बाद राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ पर प्रतिबंध लगाकर देश में एक नया राजनीतिक षड्यंत्र रचा जाने लगा। सरदार पटेल के देहावसान के पश्चात् कांग्रेस में नेहरू का अधिनायकवाद प्रबल होने लगा। गांधी और पटेल दोनों के ही नहीं रहने के कारण कांग्रेस 'नेहरूवाद' की चपेट में आ गई तथा अल्पसंख्यक तुष्टिकरण, लाइसेंस–परमिट–कोटा राज, राष्ट्रीय सुरक्षा पर लापरवाही, राष्ट्रीय मसलों जैसे कश्मीर आदि पर घुटनाटेक नीति, अंतर्राष्ट्रीय मामलों में भारतीय हितों की अनदेखी आदि अनेक विषय देश में राष्ट्रवादी नागरिकों को उद्विग्न करने लगे। 'नेहरूवाद' तथा पाकिस्तान एवं बांग्लादेश में हिन्दू अल्पसंख्यकों पर हो रहे अत्याचार पर भारत के चुप रहने से क्षुब्ध होकर डॉ श्यामा प्रसाद मुकर्जी ने नेहरु मंत्रिमंडल से त्यागपत्र दे दिया। इधर, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कुछ स्वयंसेवकों ने भी प्रतिबंध के दंश को झेलते हुए महसूस किया कि संघ के राजनीतिक क्षेत्र से सिद्धांततः दूरी बनाये रखने के कारण वे अलग–थलग तो पड़े ही, साथ ही संघ को राजनीतिक तौर पर निशाना बनाया जा रहा था। ऐसी परिस्थिति में एक राष्ट्रवादी राजनीतिक दल की आवश्यकता देश में महसूस की जाने लगी। फलतः भारतीय जनसंघ की स्थापना 21 अक्टूबर, 1951 को डॉ श्यामा प्रसाद मुकर्जी की अध्यक्षता में दिल्ली के राघोमल आर्य कन्या उच्च विद्यालय में हुई। भारतीय जनसंघ ने डॉ श्यामा प्रसाद मुकर्जी के नेतृत्व में कश्मीर एवं राष्ट्रीय अखंडता के मुद्दे पर आंदोलन छेड़ा तथा कश्मीर को किसी भी प्रकार का विशेषाधिकार देने का विरोध किया। नेहरू के अधिनायकवादी रवैये के फलस्वरूप डॉ श्यामा प्रसाद मुकर्जी को कश्मीर की जेल में डाल दिया गया, जहां उनकी रहस्यपूर्ण स्थिति में मृत्यु हो गई। एक नई पार्टी को सशक्त बनाने का कार्य पण्डित दीनदयाल उपाध्याय के कंधों पर आ गया। भारत–चीन युद्ध में भी भारतीय जनसंघ ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तथा राष्ट्रीय सुरक्षा पर नेहरू की नीतियों का डटकर विरोध किया। 1967 में पहली बार भारतीय जनसंघ एवं पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नेतृत्व में भारतीय राजनीति पर लम्बे समय से बरकरार कांग्रेस का एकाधिकार टूटा, जिससे कई राज्यों के विधानसभा चुनावों में कांग्रेस की पराजय हुई।

भारतीय जनसंघ का जनता पार्टी में विलय

सत्तर के दशक में तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी के नेतृत्व में निरंकुश होती जा रही कांग्रेस सरकार के विरूद्ध देश में जन–असंतोष उभरने लगा। गुजरात के नवनिर्माण आन्दोलन के साथ बिहार में छात्र आंदोलन शुरू हो गया। कांग्रेस ने इन आंदोलनों के दमन का रास्ता अपनाया। लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने आंदोलन का नेतृत्व स्वीकार किया तथा देशभर में कांग्रेस शासन के विरूद्ध जन–असंतोष मुखर हो उठा। १९७१ में देश पर भारत–पाक युद्ध तथा बांग्लादेश में विद्रोह के परिप्रेक्ष्य में बाह्य आपातकाल लगाया गया था जो युद्ध समाप्ति के बाद भी लागू था। उसे हटाने की भी मांग तीव्र होने लगी। जनान्दोलनों से घबराकर इंदिरा गांधी की कांग्रेस सरकार ने जनता की आवाज को दमनचक्र से कुचलने का प्रयास किया। परिणामतः 25 जून, 1975 को देश पर दूसरी बार आपातकाल भारतीय संविधान की धारा 352 के अंतर्गत 'आंतरिक आपातकाल' के रूप में थोप दिया गया। देश के सभी बड़े नेता या तो नजरबंद कर दिये गए अथवा जेलों में डाल दिए गये। समाचार पत्रों पर 'सेंसर' लगा दिया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सहित अनेक राष्ट्रवादी संगठनों पर प्रतिबंध लगा दिया गया। हजारों कार्यकर्ताओं को 'मीसा' के तहत गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया। देश में लोकतंत्र पर खतरा मंडराने लगा। जनसंघर्ष को तेज किया जाने लगा और भूमिगत गतिविधियां भी तेज हो गयीं। तेज होते जनान्दोलनों से घबराकर इंदिरा गांधी ने 18 जनवरी, 1977 को लोकसभा भंग कर दी तथा नये जनादेश प्राप्त करने की इच्छा व्यक्त की। जयप्रकाश नारायण के आह्वान पर एक नये राष्ट्रीय दल 'जनता पार्टी' का गठन किया गया। विपक्षी दल एक मंच से चुनाव लड़े तथा चुनाव में कम समय होने के कारण 'जनता पार्टी' का गठन पूरी तरह से राजनीतिक दल के रूप में नहीं हो पाया। आम चुनावों में कांग्रेस की करारी हार हुई तथा 'जनता पार्टी' एवं अन्य विपक्षी पार्टियां भारी बहुमत के साथ सत्ता में आई। पूर्व घोषणा के अनुसार 1 मई, 1977 को भारतीय जनसंघ ने करीब 5000 प्रतिनिधियों के एक अधिवेशन में अपना विलय जनता पार्टी में कर दिया।

भाजपा का गठन

जनता पार्टी का प्रयोग अधिक दिनों तक नहीं चल पाया। दो–ढाई वर्षों में ही अंतर्विरोध सतह पर आने लगा। कांग्रेस ने भी जनता पार्टी को तोड़ने में राजनीतिक दांव–पेंच खेलने से परहेज नहीं किया। भारतीय जनसंघ से जनता पार्टी में आये सदस्यों को अलग–थलग करने के लिए 'दोहरी–सदस्यता' का मामला उठाया गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से संबंध रखने पर आपत्तियां उठायी जानी लगीं। यह कहा गया कि जनता पार्टी के सदस्य राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य नहीं बन सकते। 4 अप्रैल, 1980 को जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति ने अपने सदस्यों के राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सदस्य होने पर प्रतिबंध लगा दिया। पूर्व के भारतीय जनसंघ से संबद्ध सदस्यों ने इसका विरोध किया और जनता पार्टी से अलग होकर 6 अप्रैल, 1980 को एक नये संगठन 'भारतीय जनता पार्टी' की घोषणा की। इस प्रकार भारतीय जनता पार्टी की स्थापना हुई।

विचार एवं दर्शन

भारतीय जनता पार्टी एक सुदृढ़, सशक्त, समृद्ध, समर्थ एवं स्वावलम्बी भारत के निर्माण हेतु निरंतर सक्रिय है। पार्टी की कल्पना एक ऐसे राष्ट्र की है जो आधुनिक दृष्टिकोण से युक्त एक प्रगतिशील एवं प्रबुद्ध समाज का प्रतिनिधित्व करता हो तथा प्राचीन भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति तथा उसके मूल्यों से प्रेरणा लेते हुए महान 'विश्वशक्ति' एवं 'विश्व गुरू' के रूप में विश्व पटल पर स्थापित हो। इसके साथ ही विश्व शांति

तथा न्याययुक्त अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था को स्थापित करने के लिए विश्व के राष्ट्रों को प्रभावित करने की क्षमता रखे।

भाजपा भारतीय संविधान में निहित मूल्यों तथा सिद्धांतों के प्रति निष्ठापूर्वक कार्य करते हुए लोकतांत्रिक व्यवस्था पर आधारित राज्य को अपना आधार मानती है। पार्टी का लक्ष्य एक ऐसे लोकतान्त्रिक राज्य की स्थापना करना है जिसमें जाति, सम्प्रदाय अथवा लिंगभेद के बिना सभी नागरिकों को राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक न्याय, समान अवसर तथा धार्मिक विश्वास एवं अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता सुनिश्चित हो।

भाजपा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म–मानवदर्शन' को अपने वैचारिक दर्शन के रूप में अपनाया है। साथ ही पार्टी का अंत्योदय, सुशासन, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, विकास एवं सुरक्षा पर भी विशेष जोर है। पार्टी ने पांच प्रमुख सिद्धांतों के प्रति भी अपनी निष्ठा व्यक्त की, जिन्हें 'पंचनिष्ठा' कहते हैं। ये पांच सिद्धांत (पंच निष्ठा) हैं–राष्ट्रवाद एवं राष्ट्रीय अखंडता, लोकतंत्र, सकारात्मक पंथ–निरपेक्षता (सर्वधर्मसमभाव), गांधीवादी समाजवाद (सामाजिक–आर्थिक विषयों पर गाँधीवादी दृष्टिकोण द्वारा शोषण मुक्त समरस समाज की स्थापना) तथा मूल्य आधारित राजनीति।

उपलब्धियां

श्री अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय जनता पार्टी के प्रथम अध्यक्ष निर्वाचित हुए। अपनी स्थापना के साथ ही भाजपा राष्ट्रीय राजनीति में सक्रिय हो गई। बोफोर्स एवं भ्रष्टाचार के मुद्दे पर पुनः गैर–कांग्रेसी दल एक मंच पर आये तथा 1989 के आम चुनावों में राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस को भारी पराजय का सामना करना पड़ा। वी.पी. सिंह के नेतृत्व में गठित राष्ट्रीय मोर्चे की सरकार को भाजपा ने बाहर से समर्थन दिया। इसी बीच देश में राम मंदिर के लिए आंदोलन शुरू हुआ। तत्कालीन भाजपा अध्यक्ष श्री लालकृष्ण आडवाणी ने सोमनाथ से अयोध्या तक के लिए रथयात्रा शुरू की। राम मंदिर आन्दोलन को मिले भारी जनसमर्थन एवं भाजपा की बढ़ती लोकप्रियता से घबराकर आडवाणी जी की रथयात्रा को बीच में ही रोक दिया गया। फलतः भाजपा ने राष्ट्रीय मोर्चा सरकार से समर्थन वापस ले लिया। और वी.पी. सिंह सरकार गिर गई तथा कांग्रेस के समर्थन से चन्द्रशेखर देश के अगले प्रधानमंत्री बने। आने वाले आम चुनावों में भाजपा का जनसमर्थन लगातार बढ़ता गया। इसी बीच नरसिम्हाराव के नेतृत्व में कांग्रेस तथा कांग्रेस के समर्थन से संयुक्त मोर्चे की सरकारों का शासन देशपर रहा, जिस दौरान भ्रष्टाचार, अराजकता एवं कुशासन के कई 'कीर्तिमान' स्थापित हुए।

1996 के आम चुनावों में भाजपा को लोकसभा में 161 सीटें प्राप्त हुईं। भाजपा ने लोकसभा में 1989 में 85, 1991 में 120 तथा 1996 में 161 सीटें प्राप्त कीं। भाजपा का जनसमर्थन लगातार बढ़ रहा था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में पहली बार भाजपा सरकार ने 1996 में शपथ ली, परन्तु पर्याप्त समर्थन के अभाव में यह सरकार मात्र 13 दिन ही चल पाई। इसके बाद 1998 के आम चुनावों में भाजपा ने 182 सीटों पर जीत दर्ज की और श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन की सरकार ने शपथ ली। परन्तु जयललिता के नेतृत्व में अन्नाद्रमुक द्वारा समर्थन वापस लिए जाने के कारण सरकार लोकसभा में विश्वासमत के दौरान एक वोट से गिर गई, जिसके पीछे वह अनैतिक आचरण था, जिसमें उड़ीसा के तत्कालीन कांग्रेसी मुख्यमंत्री गिरिधर गोमांग ने पद पर रहते हुए भी लोक सभा की सदस्यता नहीं छोड़ी तथा विश्वासमत के दौरान सरकार के विरूद्ध मतदान किया। कांग्रेस के इस अवैध और अनैतिक आचरण के कारण ही देश को पुनः आम चुनावों का सामना करना पड़ा। 1999 में भाजपा 182 सीटों पर पुनः विजय मिली तथा राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन को 306 सीटें प्राप्त हुईं। एक बार पुनः श्री अटल बिहारी वाजपेयी के नेतृत्व में भाजपा–नीत राजग की सरकार बनी।

भाजपा–नीत राजग सरकार ने श्री अटल बिहारी के नेतृत्व में विकास के अनेक नये प्रतिमान स्थापित किये। पोखरण

परमाणु विस्फोट, अग्नि मिसाइल का सफ़ल प्रक्षेपण, कारगिल विजय जैसी सफलताओं से भारत का कद अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर ऊंचा हुआ। राष्ट्रीय राजमार्गों का निर्माण, सार्वजनिक वितरण प्रणाली में सुधार, शिक्षा एवं स्वास्थ्य में नयी पहल एवं प्रयोग, कृषि, विज्ञान एवं उद्योग के क्षेत्रों में तीव्र विकास के साथ–साथ महंगाई न बढ़ने देने जैसी अनेकों उपलब्धियां इस सरकार के खाते में दर्ज हैं।

भारत–पाक संबंधों को सुधारने, देश की आंतरिक समस्याओं जैसे नक्सलवाद, आतंकवाद, जम्मू एवं कश्मीर तथा उत्तर पूर्व के राज्यों में अलगाववाद पर कई प्रभावी कदम उठाए गये। राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को सुदृढ़ कर सुशासन एवं सुरक्षा को केन्द्र में रखकर देश को समृद्ध एवं समर्थ बनाने की दिशा में अनेक निर्णायक कदम उठाये गए। तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं उपप्रधानमंत्री श्री लालकृष्ण आडवाणी के नेतृत्व में राजग शासन ने देश में विकास की एक नई राजनीति का सूत्रपात किया।

वर्तमान स्थिति

आज भाजपा देश में एक प्रमुख राष्ट्रवादी शक्ति के रूप में उभर चुकी है एवं देश के सुशासन, विकास, एकता एवं अखंडता के लिए कृतसंकल्प है।

10 साल पार्टी ने विपक्ष की सक्रिय और शानदार भूमिका निभाई। 2014 में श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में देश में पहली बार भाजपा की पूर्ण बहुमत के साथ सरकार बनी, जो आज ‘सबका साथ, सबका विकास’ की उद्घोषणा के साथ गौरव सम्पन्न भारत का पुनर्निर्माण कर रही है। राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री अमित शाह के नेतृत्व में भाजपा लगभग 11 करोड़ सदस्यों वाली विश्व की सबसे बड़ी राजनैतिक पार्टी बन गयी है।

26 मई, 2014 को श्री नरेंद्र दामोदरदास मोदी ने भारत के प्रधानमंत्री के तौर पर शपथ ग्रहण की। मोदी जी के नेतृत्व में भाजपा सरकार ने कम समय में ही अभूतपूर्व उपलब्धियां हासिल की हैं। उन्होंने विश्व में भारत की गरिमा को पुनःस्थापित किया, राजनीति पर लोगों के विश्वास को फिर से स्थापित किया। अनेक अभिनव योजनाओं के माध्यम से नए युग की शुरुआत की। अन्त्योदय, सुशासन, विकास एवं समृद्धि के रास्ते पर देश बढ़ चला है। आर्थिक और सामाजिक सुधार सुरक्षित जीवन जीने का मार्ग उपलब्ध करा रहे हैं। किसानों के लिये ऋण से लेकर खाद तक की नयी नीतियां जैसे प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना, सॉयल हेल्थ कार्ड, आदि ने कृषि के तीव्र विकास की अलख जगायी है। ये नया युग है सुशासन का। चाहे आदर्श ग्राम योजना हो, स्वच्छता अभियान या फिर योग के सहारे भारत को स्वथ्य बनाने का अभियान, इन सभी कदमों से देश को

भारतीय जनता पार्टी

पार्टी की स्थापना :–– 6 अप्रैल 1980
पार्टी का चुनाव चिन्ह :–– कमल का फूल
भाजपा के प्रथम राष्ट्रीय अध्यक्ष :–– अटल बिहारी वाजपेयी
भाजपा के वर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष :–– जगत प्रकाश नड्डा

भाजपा के मूल सिद्धांत –

1. एकात्म मानववाद
2. राष्ट्रीय अखंडता
3. मूल्याधारित अर्थनीति

पार्टी की वर्तमान स्थिति

- 18 करोड़ सदस्य
- विश्व का सबसे बड़ा राजनीतिक दल
- 20 राज्यों में अपनी या मिली जुली सरकार
- 303 सांसद
- देश भर में 1000 से अधिक विधायक

क्र०	अध्यक्ष	कार्यकाल
1.	अटल बिहारी वाजपेयी	(1980 से 1986)
2.	लाल कृष्ण आडवाणी	(1986 से 1991)
3.	मुरली मनोहर जोशी	(1991 से 1993)
4.	लाल कृष्ण आडवाणी	(1993 से 1998)
5.	कुशाभाऊ ठाकरे	(1998 से 2000)
6.	बंगारू लक्ष्मण	(2000 से 2001)
7.	जना कृष्णमूर्ति	(2001 से 2002)
8.	वेंकैया नायडू	(2002 से 2004)
9.	लाल कृष्ण आडवाणी	(2004 से 2005)
10.	राजनाथ सिंह	(2005 से 2009)
11.	नितिन गडकरी	(2009 से 2013)
12.	राजनाथ सिंह	(2013 से 2014)
13.	अमित शाह	(2014 से 2020)
14.	जगत प्रकाश नड्डा	(2020 से......अब तक)

अटल युग से मोदी युग

3 सांसदों से 303 सांसद तक

वर्ष	सांसद	दल	लोकसभा
1952	3	जनसंघ	पहली
1957	4	जनसंघ	दूसरी
1962	14	जनसंघ	तीसरी
1967	35	जनसंघ	चौथी
1971	21	जनसंघ	पांचवीं

1977 में जनसंघ का जनता पार्टी में विलय हो गया

वर्ष	सांसद	दल	लोकसभा
1977			छठी
1980			सातवीं

एक नयी ऊर्जा मिली है। भाजपा की मोदी सरकार ने 'मेक इन इंडिया', 'स्किल इंडिया', अमृत मिशन, दीनदयाल ग्राम ज्योति योजना, डिजिटल इंडिया जैसी योजनाओं से भारत को आधुनिक और सशक्त बनाने की दिशा में मजबूत कदम उठाया है। जनधन योजना, बेटी बचाओ–बेटी पढाओ, सुकन्या समृद्धि योजना जैसी अनेक योजनाएं देश में एक नयी क्रांति का सूत्रपात कर रही हैं। भाजपा सरकार ने देशवासियों को विश्व की सबसे बड़ी सामाजिक सुरक्षा योजना का उपहार दिया है।

भारतीय राजनीति में भाजपा का योगदान

राष्ट्रीय अखण्डता, कश्मीर के भारत में पूर्ण विलय, कबाइली वेश में पाकिस्तानी आक्रमण के प्रतिकार, परमिट व्यवस्था एवं धारा 370 की समाप्ति व पृथकतावाद से निरन्तर संघर्ष करने वाली एकमात्र पार्टी भारतीय जनसंघ या भाजपा है, अन्यथा कश्मीर का बचना कठिन था।

गोवा मुक्ति आंदोलन, सत्याग्रह एवं बलिदान। बहुत दबाव के बाद ही सरकार ने सैनिक कार्यवाही की।

बेरुबाड़ी एवं कच्छ समझौते हमारी राष्ट्रीय अखण्डता के लिए चुनौती थे। भाजपा ने इस चुनौती का सामना किया।

आज भी देश में राष्ट्रीय अखण्डता के मुद्दे उठाना पृथकतावाद से जूझना एवं इस निमित्त समाज को निरन्तर जाग्रत रखने का काम भाजपा ही कर रही है।

देश को परमाणु शक्ति सम्पन्न कर भारत पर हमलों की हिमाकत करने वालों को अटलजी की सरकार ने सीधा संदेश दिया।

लोकतंत्रः विकास एवं रक्षा

प्रथम चरण में जब स्वतंत्रता आंदोलन के सभी नेता सत्ता पक्ष में जा बैठे थे, विपक्ष या तो था ही नहीं या राष्ट्रभक्ति से शून्य वामपंथियों के पास था तब जनसंघ ने चुनौती को स्वीकार किया तथा भारत के लोकतंत्र को भारतीय जनसंघ के रूप में सबल विपक्ष दिया। 1967 में जनसंघ दूसरा बड़ा दल बन गया था।

चुनाव सुधार के मुद्दे उठाने वाला एकमात्र राजनीतिक दल जनसंघ या भाजपा ही है। लोकतांत्रिक मर्यादाओं को हमारी पार्टी ने बल दिया और उनका उल्लंघन नहीं होने दिया।

आपातकाल के प्रतिकार की कहानी हमारी लोकतंत्रात्मक निष्ठा को पुष्ट करती है।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नेतृत्व में जो विपक्ष उभरा, वही विकल्प बनने में भी सक्षम था। श्री अटल बिहारी वाजपेयी एवं श्री नरेन्द्र मोदी भारतीय लोकतंत्र में विकल्प के नियामक हैं। भारतीय लोकतंत्र के लिए अपेक्षित अखिल भारतीय संगठन एवं नेतृत्व आज केवल भाजपा के पास है।

1980 में भाजपा स्थापना उपरांत !

1984	02	भाजपा	आठवीं
1989	86	भाजपा	नंवी
1991	119	भाजपा	दसवीं
1996	161	भाजपा	ग्यारहवीं
1998	182	भाजपा	बारहवीं
1999	182	भाजपा	तेरहवीं
2004	138	भाजपा	चौदहवीं
2009	116	भाजपा	पंद्रहवी
2014	282	भाजपा	सोलहवीं
2019	303	भाजपा	सत्रहवीं

जब यह बात कही जाती है कि भारतीय जनता पार्टी दूसरी राजनीतिक पार्टियों से भिन्न एक विशेष विचारधारा वाली पार्टी है, तो यह बात केवल कहने भर की नहीं है पार्टी के कर्म चिन्ह स्वयं इस बात के साक्षी है

वास्तव में भाजपा केवल एक राजनीतिक पार्टी ही नहीं एक परिवार है संस्कार है जिसके नाम में ही सबसे पहले देश फिर देशवासियों और अंत में स्वयं का जिक्र है ।

भारतीय जनता पार्टी सिर्फ एक राजनीतिक दल नहीं बल्कि सामाजिक सरोकार का एक माध्यम बन चुकी है

आज देश की अधिकतर राजनीतिक पार्टियां कुनबा परस्ती, भाई–भतीजावाद व वंशवाद की पोषक बन कर रही गई हैं और सत्ता प्राप्ति ही उनका केवल एक मात्र लक्ष्य बन चुका है वहीं भारतीय जनता पार्टी मूल्यों पर आधारित राजनीति में विश्वास रखती है।

विचारधारा

राजनीति केवल सत्ता प्राप्त करने का साधन नहीं है। समाज को अपेक्षित दिशा में प्रगति पथ पर ले जाना भी उसका कार्य है। इसके लिये संगत दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है, जो संगत विचारधारा से प्राप्त होता है। आज भारत के सभी राजनैतिक दल विचारधारा शून्यता के शिकार हैं। भाजपा सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, एकात्म मानववाद तथा पंचनिष्ठाओं की संगत विचारधाराओं के आधार पर संगठन का नियमन कर रही है। शासन की नीति में भी इनका समुचित प्रतिबिम्बन होगा।

सुशासन

ध्येनिष्ठ कार्यकर्ताओं की शक्ति एवं सरकार का सुनियमन सुशासन की गारंटी है। छः साल का केन्द्रीय शासन एवं प्रदेशों में भाजपा की सरकारों ने अन्य दलों की सरकारों की तुलना में अच्छा शासन दिया है। गत तीन वर्षों से श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में सकारात्मक सुशासन की प्रक्रिया तीव्र गति से चल रही है। व्यवस्थाओं की पुरानी विकृतियों का शमन करने में अभी भी कुछ वक्त लगेगा।

आत्मीयता और सेवा से ही समाज परिवर्तन होता है - डॉ.मोहन भागवत

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि समाज में परिवर्तन आत्मीयता और सेवा से ही आता है. समूह में तो पशु पक्षी भी रहते हैं. किन्तु सबको जोड़ने वाला, सबकी उन्नति करने वाला धर्म कुटुम्ब प्रबोधन है. यह परिवार में संतुलन, मर्यादा तथा स्वभाव को ध्यान में रखकर कर्तव्य का निरूपण करने वाला आनन्दमय सनातन धर्म है. हमारे यहाँ कुटुम्ब प्रबोधन में ही समानता और बंधुता का भाव निहित है. सरसंघचालक बीएचयू के स्वतंत्रता भवन सभागार में काशी महानगर द्वारा आयोजित कुटुम्ब प्रबोधन कार्यक्रम में संबोधित कर रहे थे.

उन्होंने कहा कि जड़वादी और भोगवादी विचार के प्रसार से हमारे वैचारिक अधिष्ठान चले गये. हमारे यहाँ प्रारम्भ से ही समस्त चराचर का अलग–अलग अस्तित्व, अनेक पूजा प्रकार, अनेक पद्धतियां होने के बावजूद सबका मूल एक ही है. कुटुम्ब का कोई संविधान नहीं है, इसका आधार केवल आत्मीयता होता है. अपने समाज में "व्यक्ति बनाम समाज" ऐसा विभाजन नहीं है.

उन्होंने सभागार में बैठे परिवारों से कहा कि व्यक्ति की पहचान कुटुम्ब से होती है. जैसा समाज चाहिए, वैसा कुटुम्ब होना चाहिए. कुटुम्ब में ही मनुष्य को आचरण सिखाया जाता है. पारिवारिक संस्कार आर्थिक इकाई को भी बल देता है. परिवार में बेरोजगारी की समस्या नहीं हो सकती. आचरण की मर्यादा का ध्यान हमेशा रखना आवश्यक है. जूलिएस सीजर की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि वह बहुत पराक्रमी था, पर आचरण की मर्यादा न होने से संभव है कि कुछ वर्षों बाद उसे भुला दिया जाए. परन्तु लाखों वर्ष पूर्व मर्यादा पुरुषोत्तम ने अपने आचरण के आधार पर जो मापदंड स्थापित किया, वह आज भी हमारे जीवन का मार्गदर्शन कर रहे हैं. उन्होंने सूर्य का उदाहरण देते हुए कहा कि रात में अनगिनत तारे होते हैं. पर दिन में केवल अकेला सूर्य होता है, मगर वह प्रकाश ज्यादा देता है अर्थात जो निकटतम है और स्वयं प्रकाशित है, वही प्रकाश दे सकता है. अतः व्यक्ति की समाज से निकटता और स्वतः प्रकाशित आचरण समाज के लिए आवश्यक है.

कार्यकर्ता अकेले कार्य नहीं करता, उसका कुटुम्ब काम करता है. इसी तरह कुटुम्ब भी अकेले नहीं जीता, बल्कि कई कुटुम्बों का सह अस्तित्व होता है. योग्यतम की उत्तरजीविता को हम नहीं मानते. हमारी परम्परा कहती है कि जो बलवान वो सबका पोषण करेगा. सप्ताह में किसी एक दिन पूरे परिवार के साथ भजन इत्यादि करके घर का बना भोजन ग्रहण करना और उसके बाद दो–तीन घंटे तक गपशप करना, इसमें अपनी वंश परम्परा कुलरीति का सुसंगत विचार और तर्कसंगत परम्पराएं कैसे आगे बढ़ें, इस पर बातचीत करनी चाहिए. हमारी भाषा, वेशभूषा, भवन सज्जा, यात्रा, भोजन इन सब पर चर्चा होनी चाहिए. उदाहरण स्वरूप अपनी मातृभाषा न जानने पर रामचरित मानस हमसे पराया हो जाएगा. हम अपनी भाव भाषा से कट जाएँगे.

मणिपुर का प्रसंग बताते हुए उन्होंने कहा कि मणिपुरी समाज के लोग उत्सव इत्यादि में मणिपुरी वेशभूषा ही पहनते हैं. पारिवारिक संस्कार के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि जब पांडव कुंती के पास आशीर्वाद लेने गये तो कुंती ने कहा कि या तो विजयी हो या वीरगति को प्राप्त हो. परिवार में प्रत्येक सदस्य की अपनी अपनी भूमिका है और कुटुम्ब चलाने में अपनी भूमिका का निर्वहन भली प्रकार से करें. सभी व्यक्ति केवल अपने परिवारों के लिए ही न जियें, बल्कि समाज के लिए भी कार्य करें. कुटुम्ब प्रबोधन व्रत का दृढ़ता पूर्वक पालन करना जरूरी है, इसमें चाहे कितना भी समय क्यों न लगे.

उपशास्त्रीय गायन की प्रस्तुति से से श्रोता मंत्रमुग्ध

स्नेह मिलन कार्यक्रम में संस्कार भारती द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम में विदुषी सुचारिता दासगुप्ता ने चैती गीत "एहि ठइया मोतिया" होरी गीतों में "फागुन में रास रचाये रसिया" व होरी दादरा में "रंग डालूंगी नन्द के लालन पर" सुनाकर मंत्रमुग्ध कर दिया.

“लोक कल्याण को समर्पित उ0प्र0 मंत्री मण्डल”

उत्तर प्रदेश के यशस्वी मुख्यमंत्री आदरणीय योगी आदित्यनाथ जी ने उत्तर प्रदेश में सुशासन विकास और सुरक्षा का संकल्प लेकर एक नए उत्तर प्रदेश को बनाने का शपथ आज भारत रत्न अटल बिहारी क्रिकेट स्टेडियम में अपने सेनापतियों के साथ लिए, सभी को ढेर सारी बधाई और शुभकामनाएं।

सकल सुमंगलकारी, लोक कल्याण, लोक सम्मान, लोक सुरक्षा को समर्पित योगी मंत्री मण्डल का शपथ, योग्यता, क्षमता, आवश्यकता के अनुसार विभागों का दायित्व उत्तर प्रदेश के भावी स्वरूप “ नये उत्तर प्रदेश के निर्माण का दिशा सूत्र है।

योगी आदित्य नाथ

मुख्यमंत्री

उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग

नियुक्ति, कार्मिक, गृह, सतर्कता, आवास एवं शहरी नियोजन, राजस्व, खाद्य एवं रसद, नागरिक आपूर्ति, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन, भूतत्व एवं खनिकर्म, अर्थ एवं संख्या, राज्य कर एवं निबंधन, सामान्य प्रशासन, सचिवालय प्रशासन, गोपन, सूचना, निर्वाचन, संस्थागत वित्त, नियोजन, राज्य सम्पत्ति, उप्र0 पुर्गठन समन्वय, प्रशासनिक सुधार, कार्यक्रम कार्यान्वयन, अवस्थापना, भाषा, अभाव सहायता एवं पुनर्वास, लोक सेवा प्रबंधन, किराया नियंत्रण, प्रोटोकॉल, सैनिक कल्याण एवं प्रान्तीय रक्षक दल, नागरिक उड्डयन, न्याय एवं विधायी विभाग।

श्री केशव प्रसाद मौर्य

उप मुख्यमंत्री

उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग

ग्राम्य विकास एवं समग्र ग्राम विकास तथा ग्रामीण अभियंत्रण, खाद्य प्रसंस्करण, मनोरंजन कर एवं सार्वजनिक उद्यम तथा राष्ट्रीय एकीकरण।

प्रोफाइल

- पूर्व प्रदेश अध्यक्ष, भाजपा
- पूर्व उप मुख्यमंत्री
- वर्तमान एमएलसी
- एक बार विधायक
- एक बार सांसद

श्री ब्रजेश पाठक

उप मुख्यमंत्री

उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग

चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य, परिवार कल्याण, मातृ व शिशु कल्याण।

प्रोफाइल

- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- तीसरी बार विधायक
- दो बार सांसद
- राष्ट्रीय परिषद सदस्य

श्री सुरेश कुमार खन्ना
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
वित्त एवं संसदीय कार्य

प्रोफाइल
- पूर्व नेता प्रतिपक्ष
- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- पूर्व प्रदेश पदाधिकारी
- नौवीं बार विधायक

श्री सूर्य प्रताप शाही
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
कृषि, कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान

प्रोफाइल
- पूर्व प्रदेश अध्यक्ष
- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- पांचवीं बार विधायक

श्री स्वतंत्र देव सिंह
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
जल शक्ति तथा बाढ़ नियंत्रण

प्रोफाइल
- वर्तमान प्रदेश अध्यक्ष
- पूर्व राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
- तीसरी बार एमएलसी

श्रीमती बेबी रानी मौर्य
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
महिला कल्याण, बाल विकास एवं पुष्टाहार

प्रोफाइल
- राष्ट्रीय उपाध्यक्ष, भाजपा
- पूर्व राज्यपाल, उत्तराखंड
- पूर्व सदस्य, राष्ट्रीय महिला आयोग
- पूर्व प्रदेश मंत्री
- पूर्व मेयर, आगरा

श्री लक्ष्मी नारायण चौधरी
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
गन्ना विकास एवं चीनी मिलें

प्रोफाइल
- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- पांचवीं बार विधायक

श्री जयवीर सिंह
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
पर्यटन एवं संस्कृति

प्रोफाइल
- सदस्य, प्रदेश कार्यसमिति
- तीसरी बार विधायक

श्री धर्मपाल सिंह
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
पशुधन एवं दुग्ध विकास, राजनैतिक पेंशन, अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज तथा नागरिक सुरक्षा

प्रोफाइल
- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- पूर्व प्रदेश महामंत्री
- पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष
- पांचवीं बार विधायक

श्री नन्द गोपाल गुप्ता 'नन्दी'
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
औद्योगिक विकास, निर्यात प्रोत्साहन, एनआरआई व निवेश प्रोत्साहन

प्रोफाइल
- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- तीसरी बार विधायक

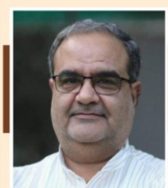

श्री भूपेन्द्र सिंह चौधरी
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
पंचायती राज

प्रोफाइल
- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- पूर्व क्षेत्रीय अध्यक्ष
- वर्तमान एमएलसी

श्री अनिल राजभर
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
श्रम एवं सेवायोजन, समन्वय

प्रोफाइल
- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- दूसरी बार विधायक

श्री जितिन प्रसाद
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
लोक निर्माण

प्रोफाइल
- पूर्व कैबिनेट मंत्री
- पूर्व सांसद
- पूर्व विधायक
- वर्तमान एमएलसी

श्री राकेश सचान
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम, खादी एवं ग्रामोद्योग, रेशम उद्योग, हथकरघा एवं वस्त्रोद्योग

प्रोफाइल
- पूर्व सांसद
- तीसरी बार विधायक

श्री अरविंद कुमार शर्मा
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
नगर विकास, शहरी समग्र विकास, नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन, ऊर्जा एवं अतिरिक्त ऊर्जा स्रोत

प्रोफाइल
- वर्तमान प्रदेश उपाध्यक्ष, भाजपा
- पूर्व आईएएस अधिकारी
- वर्तमान एमएलसी

श्री योगेन्द्र उपाध्याय
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
उच्च शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, इलेक्ट्रानिक्स एवं सूचना प्रौद्योगिकी

प्रोफाइल
- विधानमंडल दल मुख्य सचेतक
- तीसरी बार विधायक

श्री आशीष पटेल
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
प्राविधिक शिक्षा, उपभोक्ता संरक्षण एवं बांट माप

प्रोफाइल
- वर्तमान एमएलसी
- कार्यकारी अध्यक्ष, अपना दल (एस)

डॉ. संजय निषाद
कैबिनेट मंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
मत्स्य

प्रोफाइल
- वर्तमान एमएलसी
- राष्ट्रीय अध्यक्ष, निषाद पार्टी

श्री असीम अरुण
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं जनजाति कल्याण

प्रोफाइल
- पहली बार विधायक
- पूर्व आईपीएस अधिकारी

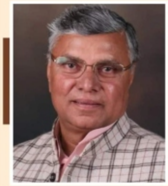

श्री धर्मवीर प्रजापति
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
कारागार एवं होमगार्ड्स

प्रोफाइल
- एम.एल.सी.
- अध्यक्ष, माटी कला बोर्ड
- पूर्व प्रदेश मंत्री

श्री गिरीश चन्द्र यादव
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
खेल एवं युवा कल्याण

प्रोफाइल
- दूसरी बार विधायक
- पूर्व राज्यमंत्री
- पूर्व जिला महामंत्री
- पूर्व सदस्य जिला पंचायत
- पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष

श्रीमती गुलाब देवी
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
माध्यमिक शिक्षा

प्रोफाइल
- पांचवी बार विधायक
- पूर्व राज्यमंत्री

श्री नितिन अग्रवाल
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
आबकारी एवं मद्य निषेध

प्रोफाइल
- चौथी बार विधायक
- पूर्व विधानसभा उपाध्यक्ष

श्री दयाशंकर सिंह
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
परिवहन

प्रोफाइल
- पहली बार विधायक
- प्रदेश उपाध्यक्ष
- पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष

श्री जे.पी.एस. राठौर
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
सहकारिता

प्रोफाइल
- प्रदेश महामंत्री
- अध्यक्ष उ.प्र. प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड

श्री अरुण कुमार सक्सेना
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
वन एवं पर्यावरण, जन्तु उद्यान एवं जलवायु परिवर्तन

प्रोफाइल
- तीसरी बार विधायक
- प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य

श्री दिनेश प्रताप सिंह
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
उद्यान, कृषि विपणन, कृषि विदेश व्यापार तथा कृषि निर्यात

प्रोफाइल
- एम.एल.सी.

श्री दयाशंकर मिश्र 'दयालु'
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
आयुष, खाद्य सुरक्षा एवं औषधि प्रशासन (एमओएस)

प्रोफाइल
- उपाध्यक्ष, पूर्वांचल विकास बोर्ड

श्री नरेन्द्र कश्यप
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
पिछड़ा वर्ग कल्याण एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण

प्रोफाइल
- प्रदेश अध्यक्ष, पिछड़ा मोर्चा
- पूर्व राज्यसभा सांसद

/BJP4UP | up.bjp.org

श्री कपिल देव अग्रवाल
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
व्यवसायिक शिक्षा एवं कौशल विकास

प्रोफाइल
- तीसरी बार विधायक
- पूर्व राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
- क्षेत्रीय संयोजक, आजीवन सहयोग निधि
- पूर्व जिला उपाध्यक्ष

श्री संदीप सिंह
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
बेसिक शिक्षा

प्रोफाइल
- दूसरी बार विधायक
- पूर्व राज्यमंत्री
- विशेष आमंत्रित सदस्य, प्रदेश कार्यकारिणी

श्री रविन्द्र जायसवाल
राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार)
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
स्टाम्प तथा न्यायालय शुल्क एवं पंजीयन

प्रोफाइल
- तीसरी बार विधायक
- पूर्व राज्यमंत्री स्वतंत्र प्रभार
- पूर्व राष्ट्रीय कार्यकारिणी सदस्य
- पूर्व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य
- पूर्व युवा मोर्चा मण्डल अध्यक्ष

श्री रामकेश निषाद
राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
जल शक्ति

प्रोफाइल
- पहली बार विधायक
- वर्तमान जिलाध्यक्ष

श्री मनोहर लाल 'मन्नू' कोरी
राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
श्रम एवं सेवायोजन

प्रोफाइल
- दूसरी बार विधायक
- पूर्व राज्यमंत्री
- प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य

श्री जसवन्त सैनी
राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
संसदीय कार्य तथा औद्योगिक विकास

प्रोफाइल
- अध्यक्ष, उ.प्र. पिछड़ा वर्ग आयोग
- पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष

श्री अजीत पाल
राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
विज्ञान एवं प्रोद्योगिकी, इलेक्ट्रानिक्स तथा सूचना प्रौद्योगिकी

प्रोफाइल
- दूसरी बार विधायक
- पूर्व राज्यमंत्री

श्री सुरेश राही
राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
कारागार

प्रोफाइल
- दूसरी बार विधायक

श्री मयंकेश्वर सिंह
राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार

विभाग
संसदीय कार्य, चिकित्सा शिक्षा, चिकित्सा, स्वास्थ्य, परिवार कल्याण तथा मातृ एवं शिशु कल्याण

प्रोफाइल
- पांचवी बार विधायक

श्री संजय गंगवार

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
गन्ना विकास एवं चीनी मिलें

प्रोफाइल

दूसरी बार विधायक

श्री बृजेश सिंह

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
लोक निर्माण

प्रोफाइल

दूसरी बार विधायक

श्रीमती प्रतिभा शुक्ला

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
महिला कल्याण, बाल विकास पुष्टाहार

प्रोफाइल

तीसरी बार विधायक

श्री अनूप प्रधान वाल्मीकि

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
राजस्व

प्रोफाइल

दूसरी बार विधायक
पूर्व जिलाध्यक्ष, अनुसूचित मोर्चा
पूर्व सदस्य, राष्ट्रीय कार्यकारिणी युवा मोर्चा
पूर्व प्रधान

श्री सतीश शर्मा

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
खाद्य एवं रसद तथा नागरिक आपूर्ति

प्रोफाइल

दूसरी बार विधायक
पूर्व जिला महामंत्री

श्री राकेश राठौर गुरु

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
नगर विकास, शहरी समग्र विकास, नगरीय रोजगार एवं गरीबी उन्मूलन

प्रोफाइल

पहली बार विधायक

श्रीमती विजय लक्ष्मी गौतम

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
ग्राम्य विकास एवं समग्र ग्राम विकास तथा ग्रामीण अभियंत्रण

प्रोफाइल

पहली बार विधायक

श्री सोमेन्द्र तोमर

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
ऊर्जा एवं वैकल्पिक ऊर्जा

प्रोफाइल

दूसरी बार विधायक
पूर्व प्रदेश महामंत्री, युवा मोर्चा

श्री दानिश आजाद अंसारी

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
अल्पसंख्यक कल्याण, मुस्लिम वक्फ एवं हज

प्रोफाइल

प्रदेश महामंत्री, अल्पसंख्यक मोर्चा

श्री संजीव गोंड

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
समाज कल्याण, अनुसूचित जाति एवं अनुसूचित जनजाति कल्याण

प्रोफाइल

दूसरी बार विधायक
पूर्व राज्यमंत्री

श्री दिनेश खटीक

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
जल शक्ति

प्रोफाइल

दूसरी बार विधायक
पूर्व जिला महामंत्री
पूर्व मण्डल अध्यक्ष

श्री बलदेव सिंह औलख

राज्यमंत्री
उत्तर प्रदेश सरकार
विभाग
कृषि, कृषि शिक्षा एवं कृषि अनुसंधान

प्रोफाइल

दूसरी बार विधायक
पूर्व राज्यमंत्री
पूर्व प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य
पूर्व जिलाध्यक्ष
पूर्व जिला महामंत्री

विधानसभा अध्यक्ष हेतु मा. सतीश महाना जी सर्व सम्मत से निर्वाचित हुए। मा0 मुख्यमंत्री श्री योगी आदित्यनाथ जी एवं वरिष्ठ जनों की उपस्थिति में मा0 महाना जी विधानसभा अध्यक्ष की कुर्सी पर आसीन हुए। माननीय अध्यक्ष महोदय को हार्दिक बधाई व उज्जवल कार्यकाल की शुभकामनाएं ।

लोकतंत्र के नायक

लखनऊ मे योगी सरकार शपथ ग्रहण समारोह की अवभूत दृष्य था। देश के सम्मानित राजनेता, पूज्य साधू संत, विद्वान, लोक कलाकार, समाजसेवी, उद्योगपति शामिल हुए। जिसमें पत्रकारों की नजर शीर्ष नेतृत्व पर जब जा रही थी तो लोकतंत्र का सबसे खूबसूरत चित्र दिख रहा था। जहाँ अधिसंख्य राजनेता सामान्य परिवारों से आते हैं। जिनके घर की पृष्टभूमि सामानय रही। आज लोकतंत्र की ही यह देन है कि प्रधान सेवक से लेकर सामान्य सेवक तक का सफर राजनैतिक दल का सामान्य कार्यकर्ता कर सकता है, भाजपा विश्व का बड़ा राजनैतिक दल इसका उदाहरण है।

नवसंवत्सर- 'हिंदू नववर्ष'

इस बड़े देश में हर वक्त हर कहीं एक सा मौसम नहीं रहता। इसलिए अलग–अलग राज्यों में स्थानीय मौसम में आने वाले बदलाव के साथ नया साल आता है। वर्ष प्रतिप्रदा भी अलग–अलग थोड़े अंतराल पर मनायी जाती है। कश्मीर में इसे **'नवरोज'**, तो आन्ध्र और कर्नाटक में **'उगादि'** महाराष्ट्र में 'गुड़ी पड़वा' केरल में **'विशु'** कहते हैं। सिन्धी इसे झूलेलाल जयंती के रूप में **'चेटीचण्ड'** के तौर पर मनाते हैं। तमिलनाडू में पोंगल, बंगाल में पोएला बैसाख और गुजरात में दिपावली पर नया साल अलग से मनाते हैं। मान्यता है कि ब्रह्मा ने चैत्र प्रतिप्रदा के दिन ही दुनिया बनाई। भगवान राम का राज्याभिषेक इसी रोज हुआ था। महाराज युधिष्ठिर भी इसी दिन गद्दी पर बैठे थे। छत्रपति शिवाजी महाराज ने हिन्दू पद पादशाही की स्थापना भी इसी दिन की। परम्परा से धड़कते पोएला वैशाख कि महिमा लाल से लाल मार्क्सवादी भी मानते हैं। बंगाल की संस्कृति में रचे बसे इस पर्व के रास्ते कभी मार्क्स ने बाधा नहीं डाली। सैकड़ों सालों तक भारत में विभिन्न प्रकार के सम्वत् प्रयोग में आते रहे। इससे काल निर्णय में अनेक भ्रम हुए। अरब यात्री अल बरुनी ने अपने वृतांत में पांच सम्वतों का जिक्र किया है। श्री हर्ष, विक्रमादित्य, शक, वल्लभ और गुप्त सम्वत्। प्रो. पांडुरंग वामन काणे अपने धर्मशास्त्र के इतिहास में लिखते हैं कि 'विक्रम सम्वत् के बारे में कुछ कहना कठिन है। वे विक्रमादित्य को परम्परा मानते हैं। पर कहते हैं यह जो विक्रम सम्वत् है। वह ई.पू. 57 से चल रहा है। और सबसे वैज्ञानिक है। अगर न होता तो, पश्चिम के कैलेण्डर में यह तय नहीं है कि सूर्यग्रहण और चन्द्रग्रहण कब लगेंगे। पर हमारे कैलेण्डर में तय है कि चन्द्रग्रहण पूर्णिमा को और सूर्यग्रहण अमावस्या को लगेंगे।

हम दुनिया में सबसे पुरानी संस्कृति के लोग हैं। इसलिए हम समझते हैं ऋतुचक्र का घूमना ही शाश्वत है, जीवन है। तभी हम इस नए साल के आने पर वैसी उछल कूद नहीं करते। जैसी पश्चिम में होती है। हमारे स्वभाव में इस परिवर्तन की गरिमा है। वजह हम साल के आने और जाने दोनों पर विचार करते हैं। पतझड़ और बसंत साथ–साथ। इस व्यवस्था के गहरे संकेत हैं। आदि–अंत। अवसान–आगमन। मिलना–बिछुड़ना। पुराने का खत्म होना नए का आना। सुनने में चाहे भले यह असगंत लगे। पर हैं साथ–साथ। एक ही सिक्के के दो पहलू। जीवन का सार। यही है नया साल।

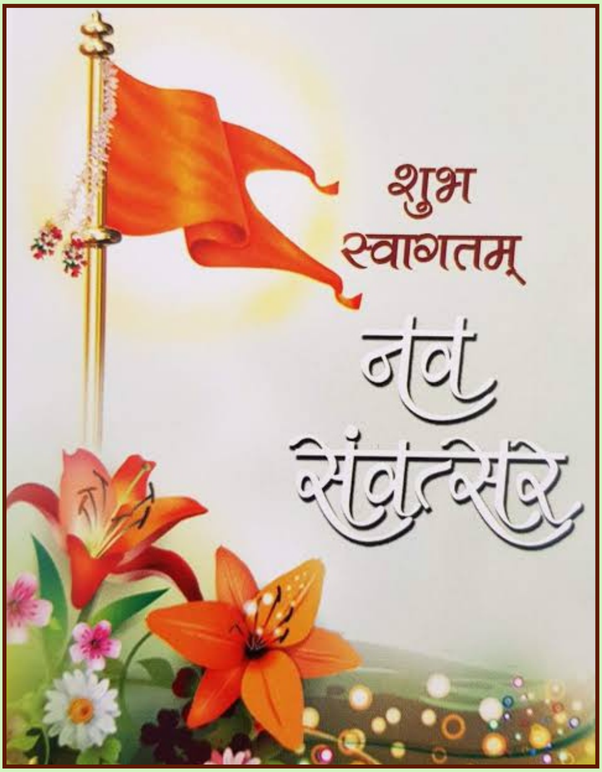

काल को पकड़ उसे बांटने का काम हमारे पुरखों ने ही सबसे पहले किया। उसे बांट दिन, महीना, साल बनाने का काम पहली बार भारत में ही हुआ। जर्मन दार्शनिक मैक्समूलर भी मानते हैं 'आकाश मण्डल की गति, ज्ञान, काल निर्धारण का काम पहले पहल भारत में हुआ था।' ऋग्वेद कहता है 'ऋषियों ने काल को बारह भागों और तीन सौ साठ अंशों में बांटा है।' वैज्ञानिक चिंतन के साथ हुए इस बांटवारे को बाद में ग्रेगोरियन कैलेंडर ने भी माना। आर्यभट्ट, भास्कराचार्य, वराहमिहिर और बह्मगुप्त ने छोटी से छोटी और बड़ी से बड़ी काल की इकाई की पहचान की। बारह महीने का साल और सात रोज का सप्ताह रखने का रिवाज विक्रम सम्वत् से शुरु हुआ। वीर विक्रमादित्य उज्जैयनी का राजा था। शको को जिस रोज उसने देश से खदेड़ा उसी रोज से विक्रम सम्वत् बना। इतिहास देखने से लगता है कि कई विक्रमादित्य हुए। बाद में तो यह पदवी हो गयी। पर लोक जीवन में उसकी व्याप्ति न्यायपाल के नाते ज्यादा है। उसकी न्यायप्रियता का असर उस सिंहासन पर भी आ गया था जिस पर वह बैठता था। बाद में तो जो उस सिंहासन पर बैठा गजब का न्यायप्रिय हुआ। लोक में शको से उसके युद्ध की कथा नहीं सिंहासन की चलती है।

विक्रम सम्वत् से 6676 ईसवीं पहले सप्तर्षी सम्वत् यहां सबसे पुराना सम्वत माना जाता था। फिर कृष्ण जन्म से कृष्ण कैलेण्डर, उसके बाद कलि सम्वत् आया। विक्रम सम्वत् की शुरुआत 57 ईसा पूर्व में हुई। इसके बाद 78 ईसवीं में शक सम्वत् शुरु हुआ। भारत सरकार ने शक सम्वत् को ही माना है। विक्रम सम्वत् का प्रारंभ सूर्य के मेष राशि में प्रवेश से माना जाता है। चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही चंद्रमा का 'ट्रांजिशन' भी शुरू होता है। इसलिए चैत्र प्रतिपदा चन्द्रकला का पहला दिन होता है। मानते हैं इस रोज चन्द्रमा से जीवनदायी रस निकलता है। जो औषधियों और वनस्पतियों के लिए जीवनप्रद होता है। इसीलिए वर्ष प्रतिपदा के बाद वनस्पतियों में जीवन भर आता है।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से ही हुआ सृष्टि का प्रारंभ

भारत का सर्वमान्य संवत विक्रम सम्वत् है, जिसका प्रारंभ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से होता है। ब्रह्म पुराण के अनुसार चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ही सृष्टि का प्रारंभ हुआ था और इसी दिन भारत वर्ष में काल गणना प्रारंभ हुई थी। कहा है कि :–

चैत्र मासे जगद्ब्रह्म समग्रे प्रथमेऽनि
शुक्ल पक्षे समग्रे तु सदा सूर्योदये सति – ब्रह्म पुराण

अर्थात 'ब्रह्म पुराण में वर्णित इस श्लोक के मुताबिक चैत्र मास के प्रथम दिन प्रथम सूर्योदय पर ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी। इसी दिन से संवत्सर की शुरूआत होती है।

नव वर्ष का आवाहन मन्त्र :

ॐ भूर्भुवः स्वः संवत्सर अधिपति आवाहयामि पूजयामि च

आवाहन पश्चात :

यश्चेव शुक्ल प्रतिपदा धीमान श्रृणोति वर्षीय फल पवित्रम भवेद धनाढ्यो बहुसश्य भोगो जाह्यश पीडां तनुजाम, च वार्षिकीम

अर्थात – जो व्यक्ति चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को इस पवित्र वर्ष फल को श्रृद्धा से सुनता है तो धन धान्य से युक्त होता है ।चैत्र शुक्ल प्रतिपदा को ब्राह्मण या ज्योतिषी को बुलाकर नव संवत्सर का फल सुनने की परम्परा प्राचीन काल से चली आ रही है ।

चैत्र शुक्ल की प्रतिपदा वसंत ऋतु में आती है। वसंत ऋतु में वृक्ष, लता फूलों से लदकर आह्लादित होते हैं जिसे मधुमास भी कहते हैं। इतना ही यह वसंत ऋतु समस्त चराचर को प्रेमाविष्ट करके समूची धरती को विभिन्न प्रकार के फूलों से अलंकृत कर जन मानस में नववर्ष की उल्लास, उमंग तथा मादकाता का संचार करती है।

इस नव संवत्सर का इतिहास बताता है कि इसके आरंभकर्ता महाराज विक्रमादित्य थे। कहा जाता है कि देश की अक्षुण्ण भारतीय संस्कृति और शांति को भंग करने के लिए उत्तर पश्चिम और उत्तर से विदेशी शासकों एवं जातियों ने इस देश पर आक्रमण किए और अनेक भूखंडों पर अपना अधिकार कर लिया और अत्याचार किए जिनमें एक क्रूर जाति के शक तथा हूण थे। शक लोग पारस कुश (ईरान देश) सिंध (भारत) आए थे। सिंध से सौराष्ट्र, गुजरात एवं महाराष्ट्र में फैल गए और दक्षिण गुजरात से इन लोगों ने उज्जयिनी पर आक्रमण किया। शकों ने समूची उज्जयिनी को पूरी तरह विध्वंस कर दिया और इस तरह इनका साम्राज्य शक विदिशा और मथुरा तक फैल गया। इनके क्रूर अत्याचारों से जनता में त्राहि–त्राहि मच गई तो मालवा के प्रमुख नायक विक्रमादित्य के नेतृत्व में देश एक हुआ और इन विदेशियों को खदेड़ कर बाहर कर दिया गया। इस तरह महाराज विक्रमादित्य ने शकों को पराजित कर एक नए युग का सूत्रपात किया जिसे विक्रमी शक संवत्सर कहा जाता है।

चैत्र प्रतिपदा यानी गुड़ी पड़वा। हिंदू नव वर्ष। हिंदू धर्मग्रंथों के अनुसार दुनिया इसी दिन बनी थी। हिंदू नव वर्ष, पश्चिम में मनाए जा रहे नए साल की तरह रात के अंधेरे में नहीं आता बल्कि हम सूरज की पहली किरण के साथ नव वर्ष का स्वागत करते हैं। हिंदू नव वर्ष का तारीख से उतना सम्बन्ध नहीं है, जितना मौसम से है। उसका आना सिर्फ कैलेण्डर से पता नहीं चलता। प्रकृति झकझोर कर हमें चौतरफा फूट रही नवीनता का अहसास कराती है। पुराने पीले पत्ते पेड़ से गिरते हैं। नयी कोपलें फूटती हैं। प्रकृति अपने श्रृंगार की प्रक्रिया में होती है। लाल, पीले, नीले, गुलाबी फूल खिलते हैं। यूं लगता है कि पूरी की पूरी सृष्टि नयी हो गयी है। ऐसा लगता है नव गति, नव लय, ताल, छन्द, नव। सब नवीनता से लबालव हैं।

वर्ष प्रतिपदा का महत्व

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नए वर्ष का आरंभ माना जाता है।

प्रतिपदा से प्रारंभ कर नौ दिन में छः मास के लिए शक्ति संचय।

हमारे सामाजिक और कार्यों के अनुष्ठान की धुरी के रूप में तिथि।

माँ दुर्गा की उपासना की नवरात्र व्रत का प्रारम्भ ।

चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नए वर्ष का आरंभ माना जाता है।

ब्रह्म पुराण में ऐसे संकेत मिलते हैं कि इसी तिथि को ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना की थी।

सृष्टि की रचना का उल्लेख अथर्ववेद तथा शतपथ ब्राह्मण में भी मिलता है।

सतयुग का आरंभ भी इसी दिन से हुआ था।

सृष्टि के संचालन का दायित्व इसी दिन से सारे देवताओं ने संभाल लिया था।

'स्मृत कौस्तुभ' के मतानुसार भगवान विष्णु ने वर्ष प्रतिपदा के दिन ही प्रथम अवतार (मत्स्यावतार) लिया था।

एक प्राचीन मान्यता है कि आज के दिन ही भगवान राम जानकी माता को लेकर अयोध्या लौटे थे।

इस दिन अयोध्या में भगवान राम के स्वागत में विजय पताका के रूप में ध्वज लगाए, इसे ब्रह्म ध्वज कहा गया।

युगाब्द (युधिष्ठिवर संवत) का आरम्भो तथा उनका राज्याभिषेक ।

उज्जबयिनी सम्राट– विक्रमादित्यस द्वारा विक्रमी संवत् प्रारम्भन ।

शालिवाहन शक संवत् (भारत सरकार का राष्ट्रीवय पंचांग) का प्रारम्भर ।

महर्षि दयानन्द द्वारा आर्य समाज की स्थाकपना का दिवस ।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थीपक केशव बलिराम हेडगेवार का जन्म दिवस ।

सिख परंपरा के द्वितीय गुरु अंगद देव जी के जन्म दिवस।

मराठी भाषियों की एक मान्यता यह भी है कि मराठा साम्राज्य के अधिपति छत्रपति शिवाजी महाराज ने वर्ष प्रतिपदा के दिन ही हिन्दू पदशाही का भगवा विजय ध्वज लगाकर हिंदवी साम्राज्य की नींव रखी।

शक सम्वत और विक्रम सम्वत् में अंतर क्या है?

सम्वत को समय की गणना का भारतीय मापदंड माना जाता है? भारत में दो सम्वत प्रचलित हैं, शक सम्वत् और विक्रम सम्वत?

संवत् का इतिहासः इतिहास में इस बात के तथ्य मौजूद हैं जिनसे पता चलता है कि भारत में सम्वत् का प्रयोग लगभग 2000 वर्ष से ही होना शुरू हुआ है। इससे पहले शासन वर्ष का उपयोग समय की गणना के लिए किया जाता था। महान शासक अशोक, कौटिल्य, कुषाण और सातवाहन तक यह गणना चलती रही। इससे इतिहासकारों में भ्रम की स्थिति बनी रही। हिंदुओं का सबसे प्राचीन संवत् 'सप्तऋषि संवत'?

सप्तऋषि– माना जाता है जिसका आरंभ विक्रम सम्वत् से पूर्व 6676 ई.पू. हुआ था और इसकी शुरुआत 3076 ई. पू. हुई थी। इसके बाद कृष्ण कैलेंडर और फिर कलियुग संवत् का प्रचलन हुआ था। इसके बाद 78 ई.पू. शक संवत् और 57 ई. पू. विक्रम संवत् का आरंभ हुआ था।

शक संवत्– शक संवत् भारत का राष्ट्रीय कैलेंडर है. इस सम्वत् का आरंभ 78 ई. से हुआ था. इस संवत् का आरंभ कुषाण राजा **'कनिष्क महान'** ने अपने राज्य आरोहण को उत्सव के रूप में मनाने और उस तिथि को यादगार बनाने के लिए किया था। इस सम्वत् के पहली तिथि चैत्र के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा है और इसी तिथि पर कनिष्क ने राज्य सत्ता संभाली थी। यह सम्वत् अन्य संवतों की तुलना में कहीं अधिक वैज्ञानिक और त्रुटिहीन है। यह सम्वत् प्रत्येक वर्ष में मार्च की 22 तारीख को शुरू होता है और इस दिन सूर्य विषुवत रेखा के ऊपर होता है और इसी कारण दिन और रात बराबर के समय के होते हैं। शक सम्वत् के दिन 365 होते हैं और इसका लीप ईयर भी अंग्रेजी ग्रेगोरियन कैलेंडर के साथ ही होता है। लीप ईयर होने पर शक सम्वत् 23 मार्च को शुरू होता है और उसमें 366 दिन होते हैं। भारत में इस सम्वत् का प्रयोग वराहमिरि द्वारा 500 ई. से किया जा रहा है।

विक्रम संवत्ः विक्रम संवत हिन्दू पंचांग में समय गणना की प्रणाली का नाम है। यह संवत 57 ईसा पूर्व आरम्भ होती है। इसका प्रणेता सम्राट विक्रमादित्य को माना जाता है। जिस अंग्रेजी कैलेंडर को आज के समय में हम इस्तेमाल कर रहे हैं, विक्रम संवत उस कैलेंडर से 56.7 साल आगे चल रहा है। विक्रम सम्वत् में समय की पूरी गणना सूर्य और चाँद के आधार पर की गयी है यानि दिन, सप्ताह, मास और वर्ष की गणना पूरी तरह से वैज्ञानिक है। पौराणिक कथा के अनुसार चैत्र मास की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को ब्रह्माजी ने सृष्टि की रचना आरंभ करी थी इसलिए हिन्दू इस तिथि को 'नववर्ष का आरंभ' मानते हैं। इसके अतिरिक्त इस तिथि से नवरात्रे भी शुरू होते हैं।

विश्व जल दिवस, 22 मार्च विशेष

जल जीवन का आधार

ललित गर्ग

जिन पाँच तत्वों को जीवन का आधार माना गया है, उनमें से एक तत्व जल है। जल के बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। मानव एवं जीव–जन्तुओं के अलावा जल कृषि के सभी रूपों और अधिकांश औद्योगिक उत्पादन प्रक्रियाओं के लिये भी बेहद आवश्यक है। परंतु आज पूरी दुनिया जल–संकट के साए में खड़ी है। अनियोजित औद्योगीकरण, बढ़ता प्रदूषण, घटते रेगिस्तान एवं ग्लेशियर, नदियों के जलस्तर में गिरावट, पर्यावरण विनाश, प्रकृति के शोषण और इनके दुरुपयोग के प्रति असंवेदनशीलता पूरे विश्व को एक बड़े जल संकट की ओर ले जा रही है। पैकेट और बोतल बन्द पानी आज विकास के प्रतीकचिह्न बनते जा रहे हैं और अपने संसाधनों के प्रति हमारी लापरवाही अपनी मूलभूत आवश्यकता को बाजारवाद के हवाले कर देने की राह आसान कर रही है। विशेषज्ञों ने जल को उन प्रमुख संसाधनों में शामिल किया है, जिन्हें भविष्य में प्रबंधित करना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होगा। सदियों से निर्मल जल का स्त्रोत बनी रहीं नदियाँ प्रदूषित हो रही हैं, जल संचयन तंत्र बिगड़ रहा है, और भू–जल स्तर लगातार घट रहा है। इन सभी समस्याओं से दुनिया को अवगत कराने एवं सबको जागरूक करने के लिए 1993 से प्रतिवर्ष 22 मार्च को विश्व जल दिवस मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व के सभी देशों में स्वच्छ एवं सुरक्षित जल की उपलब्धता सुनिश्चित करवाना है साथ ही जल संरक्षण के महत्व पर भी ध्यान केंद्रित करना है। आप सोच सकते हैं कि एक मनुष्य अपने जीवन काल में कितने पानी का उपयोग करता है, किंतु क्या वह इतने पानी को बचाने का प्रयास करता है?

धरती के क्षेत्रफल का लगभग 70 प्रतिशत भाग जल से भरा हुआ है। परंतु, पीने योग्य जल मात्र तीन प्रतिशत है। इसमें से भी मात्र एक प्रतिशत मीठे जल का ही वास्तव में हम उपयोग कर पाते हैं। लेकिन, मानव अपने स्वास्थ्य, सुविधा, दिखावा व विलासिता में अमूल्य जल की बर्बादी करने से नहीं चूकता। पानी का इस्तेमाल करते हुए हम पानी की बचत के बारे में जरा भी नहीं सोचते, जिसके परिणामस्वरूप अधिकांश जगहों पर जल संकट की स्थिति पैदा हो चुकी है। तापमान में जैसे–जैसे वृद्धि हो रही है, भारत के कई हिस्सों में पानी की समस्या विकराल रूप धारण कर रही है। प्रतिवर्ष यह समस्या पहले के मुकाबले और बढ़ती जा रही है। संयुक्त राष्ट्र की एक रिपोर्ट के अनुसार वैश्विक जल उपयोग पिछले 100 वर्षों में छह गुणा बढ़ गया है, और बढ़ती आबादी, आर्थिक विकास तथा खपत के तरीकों में बदलाव के कारण यह प्रतिवर्ष लगभग एक प्रतिशत की दर से लगातार बढ़ रहा है। पानी की अनियमित और अनिश्चित आपूर्ति के साथ–साथ, जलवायु परिवर्तन से वर्तमान में पानी की कमी वाले इलाकों की स्थिति विकराल रूप ले चुकी है। ऐसी स्थिति में, जल– संरक्षण एकमात्र उपाय है। जल संरक्षण का अर्थ पानी की बर्बादी और उसे प्रदूषित होने से रोकना है। क्योंकि जल है तो कल है।

जल का महत्व इस बात से भी समझा जा सकता है कि दुनिया की बड़ी–बड़ी सभ्यताएं नदियों के किनारे ही विकसित हुई हैं, और प्राचीन नगर नदियों के तट पर ही बसे। जल का संकट एवं विकट स्थितियां अति प्राचीन समय से बनी हुई है। इसी कारण राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश आदि प्रांतों में जल संरक्षण के लिये नाड़ी,

तालाब, जोहड़, बन्धा, सागर, समंद एवं सरोवर आदि बनाने की प्राचीन परम्परा रही है। राजा–महाराजाओं तथा सेठ–साहूकारों ने अपने पूर्वजों की स्मृति में अपने नाम को चिरस्थायी बनाने के उद्देश्य से इन प्रदेशों के विभिन्न भागों में कलात्मक बावड़ियों, कुओं, तालाबों, झालरों एवं कुंडों का निर्माण करवाया। अनुपम मिश्र की पुस्तक 'आज भी खरे है तालाब' विकट होती जा रही जल समस्या के समाधान का अमूल्य दस्तावेज है।

कुएँ पानी के महत्त्वपूर्ण स्रोत हैं। राजस्थान में कई प्रकार के कुएँ पाए जाते हैं। इसके अतिरिक्त बावड़ी या झालरा भी है जिनको धार्मिक दृष्टि से महत्त्वपूर्ण माना जाता है। मेरा बचपन राजस्थान के नागौर जिले के लाडनूं में बीता, लाडनूं, सुजानगढ़, छापर, चाडवास, चूरु, बीकानेर जिले में भूगर्भ जल एवं वर्षा के जल को संरक्षित एवं सुरक्षित करने की परम्परा हर व्यक्ति एवं हर घर में देखने को मिलेगी, वहां के घरों में वर्षा के जल को संरक्षित करने के लिये हर घर में कुंए हैं, सभी घरों का निर्माण इस तरह किया गया है कि सम्पूर्ण वर्षा जल इन कुंओं में इकट्ठा किया जा सके। राजस्थान में जल संचयन की परम्परागत विधियाँ उच्च स्तर की हैं, जो समूचे विश्व के लिये भूगर्भ जल संरक्षण एवं संवर्धन का माध्यम बन सकती है। इनके विकास में राज्य की धार्मिक एवं सांस्कृतिक मान्यताओं का प्रमुख योगदान है। जहाँ प्रकृति एवं संस्कृति परस्पर एक दूसरे से समायोजित रही हैं।

राजस्थान के किले तो वैसे ही प्रसिद्ध हैं पर इनका जल प्रबन्धन विशेष रूप से देखने योग्य है और अनुकरणीय भी हैं। जल संचयन की परम्परा वहाँ के सामाजिक ढाँचे से जुड़ी हुई हैं तथा जल के प्रति धार्मिक दृष्टिकोण के कारण ही प्राकृतिक जलस्रोतों को पूजा जाता है। यहाँ के स्थानीय लोगों ने पानी के कृत्रिम स्रोतों का निर्माण किया है। जिन्होंने पानी की प्रत्येक बूँद का व्यवस्थित उपयोग करने वाली लोक–कथाएँ एवं आस्थाएँ विकसित की हैं, साहित्य में भी जल संरक्षण की व्यापक चर्चा है, जिनके आधार पर ही प्राकृतिक जल का संचय करके कठिन परिस्थितियों वाले जीवन को सहज बनाया है। जल उचित प्रबन्धन हेतु पश्चिमी राजस्थान में आज भी सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में पराती में चौकी रखकर उस पर बैठकर स्नान करते हैं जिससे शेष बचा पानी अन्य उपयोग में आ सके। तेरापंथ के एक श्रावक हुए हैं रूपचन्दजी, जिनके बारे में प्रचलित है कि वे 72 तोले जल से स्नान करते थे, यानी एक लोटा से भी कम।

उदयपुर में विश्व प्रसिद्ध झीलों में जयसमंद, उदयसागर, फतेहसागर, राजसमंद एवं पिछोला में काफी मात्रा में जल संचय होता रहता है। इन झीलों से सिंचाई के लिये जल का उपयोग होता है। इसके अतिरिक्त इनका पानी रिसकर बावड़ियों में भी पहुँचता है जहाँ से इसका प्रयोग पेयजल के रूप में करते हैं। कुएँ, बावड़ी व तालाबों की विरासत हमारे पुरखों ने हमें सौंपी है। अतः पुराने जलस्रोतों की सार–सम्भाल करना हमारा दायित्व है। वैज्ञानिक अब पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों पर पहले पानी की खोज को प्राथमिकता देते हैं। पानी के बिना जीवन जीवित ही नहीं रहेगा। इसी कारणवश अधिकांश संस्कृतियाँ नदी के किनारे विकसित हुई हैं। इस प्रकार 'जल ही जीवन है' का अर्थ सार्थक है। असाधारण आवश्यकता को पूरा करने के लिए, जलाशय सिकुड रहे हैं, जल विश्व की बड़ी एवं विकट समस्या है। इन बातों से साफ हो जाता है कि भूजल की स्थिति आने वाले वक्त में क्या होगी? इसे गम्भीरता से लेने की जरूरत है? इस दृष्टि से अन्तर्राष्ट्रीय जल दिवस पर व्यापक चिन्तन–मंथन होना चाहिए। पर्यावरण तथा विकास पर केंद्रित रियो डि जेनेरियो के संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में वर्ष 1992 में विश्व जल दिवस की पहल की गई। वर्ष 1993 में 22 मार्च को पहली बार 'विश्व जल दिवस' का आयोजन किया गया। इसके बाद से प्रतिवर्ष लोगों के बीच जल का महत्व, आवश्यकता और संरक्षण के बारे में जागरूकता बढ़ाने के लिये यह दिवस मनाया जाता है। आज जल संरक्षण के प्रति पूरा विश्व एकजुट हो रहा है। हर देश अपने अनुरूप जल संरक्षण के प्रति कार्य कर रहा है। भारत भी जल संरक्षण के प्रति प्रतिबद्ध है। इसके अंतर्गत देश के सभी नागरिकों को स्वच्छ जल की उपलब्धता संचित करने के लिये भारत ने जल शक्ति मंत्रालय की स्थापना की है। यदि आज हमने जल संरक्षण के महत्व को नहीं समझा, तो वह दिन दूर नहीं, जब भविष्य की पीढ़ियों के लिए धरती पर भीषण जल–संकट खड़ा हो जाएगा। आज विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थाएं अलग–अलग मंचों पर जल संरक्षण के महत्व को रेखांकित करने और लोगों को इसके प्रति जागरूक बनाने की दिशा में काम कर रही हैं। भारत सरकार द्वारा भी इस दिशा में योजनाबद्ध ढंग से काम किया जा रहा है। आज आवश्यकता इस बात की है कि विश्व जल दिवस की मूल भावना को अपने दैनिक जीवन में उतारकर हर व्यक्ति, हर दिन जल संरक्षण का यथासंभव प्रयास करे।

आत्म निर्भर भारत का सपना।

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। बीते सप्ताह हमने एक ऐसी उपलब्धि हासिल की, जिसने हम सबको गर्व से भर दिया। आपने सुना होगा कि भारत ने पिछले सप्ताह 400 बिलियन डॉलर, यानी, 30 लाख करोड़ रुपये के export का target हासिल किया है। पहली बार सुनने में लगता है कि ये अर्थव्यवस्था से जुड़ी बात है, लेकिन ये, अर्थव्यवस्था से भी ज्यादा, भारत के सामर्थ्य, भारत के potential से जुड़ी बात है। एक समय में भारत से export का आँकड़ा कभी 100 बिलियन, कभी डेढ़–सौ बिलियन, कभी 200 सौ बिलियन तक हुआ करता था, अब आज, भारत 400 बिलियन डॉलर पर पहुँच गया है। इसका एक मतलब ये कि दुनिया भर में भारत में बनी चीज़ों की demand बढ़ रही है, दूसरा मतलब ये कि भारत की supply chain दिनों–दिन और मजबूत हो रही है और इसका एक बहुत बड़ा सन्देश भी है। देश, विराट कदम तब उठाता है जब सपनों से बड़े संकल्प होते हैं। जब संकल्पों के लिये दिन–रात ईमानदारी से प्रयास होता है, तो वो संकल्प, सिद्ध भी होते हैं, और आप देखिये, किसी व्यक्ति के जीवन में भी तो ऐसा ही होता है। जब किसी के संकल्प, उसके प्रयास, उसके सपनों से भी बड़े हो जाते हैं तो सफलता उसके पास खुद चलकर के आती है।

मन की बात

साथियो, देश के कोने–कोने से नए–नए product जब विदेश जा रहे हैं। असम के हैलाकांडी के लेदर प्रोडक्ट (leather product) हों या उस्मानाबाद के handloom product, बीजापुर की फल–सब्जियाँ हों या चंदौली का black rice, सबका export बढ़ रहा है। अब, आपको लद्दाख की विश्व प्रसिद्द एप्रिकोट(apricot) दुबई में भी मिलेगी और सउदी अरब में, तमिलनाडु से भेजे गए केले मिलेंगे। अब सबसे बड़ी बात ये कि नए–नए चतवकनबजे, नए–नए देशों को भेजे जा रहे हैं। जैसे हिमाचल, उत्तराखण्ड में पैदा हुए मिलेट्स (millets)मोटे अनाज की पहली खेप डेनमार्क को निर्यात की गयी। आंध्र प्रदेश के कृष्णा और चित्तूर जिले के बंगनपल्ली और सुवर्ण रेखा आम, दक्षिण कोरिया को निर्यात किये गए। त्रिपुरा से ताजा कटहल, हवाई रास्ते से, लंदन निर्यात किये गए और तो और पहली बार नागालैंड की राजा मिर्च को लंदन भेजा गया। इसी तरह भालिया गेहूं की पहली खेप, गुजरात से Kenya और Sri Lanka निर्यात की गयी। यानी, अब आप दूसरे देशों में जाएंगे, तो Made in India products पहले की तुलना में कहीं ज्यादा नज़र आएँगे।

साथियो, यह सपेज बहुत लम्बी है और जितनी लम्बी ये सपेज है, उतनी ही बड़ी Make in India की ताकत है, उतना ही विराट भारत का सामर्थ्य है, और सामर्थ्य का आधार है। हमारे किसान, हमारे कारीगर, हमारे बुनकर, हमारे इंजीनियर, हमारे लघु उद्यमी, हमारा MSME Sector, ढ़ेर सारे अलग–अलग profession के लोग, ये सब इसकी सच्ची ताकत हैं। इनकी मेहनत से ही 400 बिलियन डॉलर के export का लक्ष्य प्राप्त हो सका है और मुझे खुशी है कि भारत के लोगों का ये सामर्थ्य अब दुनिया के कोने–कोने में, नए बाजारों में पहुँच रहा है। जब एक–एक भारतवासी local के लिए vocal होता है, तब, local को global होते देर नहीं लगती है। आइये, सवबंस को global बनाएँ और हमारे उत्पादों की प्रतिष्ठा को और बढायें।

साथियो, 'मन की बात' के श्रोताओं को यह जानकर के अच्छा लगेगा कि घरेलू स्तर पर भी हमारे लघु उद्यमियों की सफलता हमें गर्व से भरने वाली है। आज हमारे लघु उद्यमी सरकारी खरीद में Government e&Market place यानी GeM के माध्यम से बड़ी भागीदारी निभा रहे हैं। Technology के माध्यम से बहुत ही transparent व्यवस्था विकसित की गयी है। पिछले एक साल में GeM portal के जरिए, सरकार ने एक लाख करोड़ रुपये से ज्यादा की चीजें खरीदी हैं। देश के कोने–कोने से करीब–करीब सवा–लाख लघु उद्यमियों, छोटे दुकानदारों ने अपना सामान सरकार को सीधे बेचा है। एक ज़माना था जब बड़ी कम्पनियां ही सरकार को सामान बेच पाती थीं। लेकिन अब देश बदल रहा है, पुरानी व्यवस्थाएँ भी बदल रही हैं। अब छोटे से छोटा दुकानदार भी GeM Portal पर सरकार को अपना सामान बेच सकता है – यही तो नया भारत है। ये न केवल बड़े सपने देखता है, बल्कि उस लक्ष्य तक पहुँचने का साहस भी दिखाता है, जहां पहले कोई नहीं पहुँचा है। इसी साहस के दम पर हम सभी भारतीय मिलकर आत्मनिर्भर भारत का सपना भी जरुर पूरा करेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, हाल ही में हुए पदम् सम्मान समारोह में

आपने बाबा शिवानंद जी को जरुर देखा होगा। 126 साल के बुजुर्ग की फुर्ती देखकर मेरी तरह हर कोई हैरान हो गया होगा और मैंने देखा, पलक झपकते ही, वो नंदी मुद्रा में प्रणाम करने लगे। मैंने भी बाबा शिवानंद जी को झुककर बार–बार प्रणाम किया। 126 वर्ष की आयु और बाबा शिवानंद की Fitness, दोनों, आज देश में चर्चा का विषय है। मैंने Social Media पर कई लोगों का comment देखा, कि बाबा शिवानंद, अपनी उम्र से चार गुना कम आयु से भी ज्यादा पिज हैं। वाकई, बाबा शिवानंद का जीवन हम सभी को प्रेरित करने वाला है। मैं उनकी दीर्घ आयु की कामना करता हूँ। उनमें योग के प्रति एक Passion है और वे बहुत Healthy Lifestyle जीते हैं।

जीवेम शरदः शतम्।

हमारी संस्कृति में सबको सौ–वर्ष के स्वस्थ जीवन की शुभकामनाएँ दी जाती हैं। हम 7 अप्रैल को 'विश्व स्वास्थ्य दिवस' मनाएंगे। आज पूरे विश्व में health को लेकर भारतीय चिंतन चाहे वो योग हो या आयुर्वेद इसके प्रति रुझान बढ़ता जा रहा है। अभी आपने देखा होगा कि पिछले ही सप्ताह कतर में एक योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसमें 114 देशों के नागरिकों ने हिस्सा लेकर एक नया World Record बना दिया। इसी तरह से Ayush Industry का बाजार भी लगातार बड़ा हो रहा है। 6 साल पहले आयुर्वेद से जुड़ी दवाइयों का बाजार 22 हजार करोड़ रुपए के आसपास का था। आज Ayush Manufacturing Industry, एक लाख चालीस हजार करोड़ रुपए के आसपास पहुँच रही है, यानि इस क्षेत्र में संभावनाएँ लगातार बढ़ रही हैं। Start&Up World में भी, आयुष, आकर्षण का विषय बनता जा रहा है।

साथियो, Health Sector के दूसरे Start&Ups पर तो मैं पहले भी कई बार बात कर चुका हूँ, लेकिन इस बार Ayush Start&Ups पर आपसे विशेष तौर पर बात करूँगा। एक Start&Up है Kapiva ! (कपिवा)। इसके नाम में ही इसका मतलब छिपा है। इसमें Ka का मतलब है– कफ, Pi का मतलब है– पित्त और Va का मतलब है– वात। यह Start&Up हमारी परम्पराओं के मुताबिक Healthy Eating Habits पर आधारित है। एक और Start&Up, निरोग–स्ट्रीट भी, Ayurveda Healthcare Ecosystem में एक अनूठा Concept है। इसका Technology&driven Platform, दुनिया–भर के Ayurveda Doctors को सीधे लोगों से जोड़ता है। 50 हजार से अधिक Practitioners इससे जुड़े हुए हैं। इसी तरह, Atreya (आत्रेय) Innovations, एक Healthcare Technology Start&Ups है, जो, Holistic Wellness के क्षेत्र में काम कर रहा है। Ixoreal (इक्जोरियल) ने न केवल अश्वगंधा के उपयोग को लेकर जागरूकता फैलाई है, बल्कि Top&Quality Production Processes पर भी बड़ी मात्रा में निवेश किया है। Cureveda (क्योरवेदा) ने जड़ी–बूटियों के आधुनिक शोध और पारंपरिक ज्ञान के संगम से Holistic Life के लिए Dietary Supplements का निर्माण किया है।

साथियो, अभी तो मैंने कुछ ही नाम गिनाए हैं, ये लिस्ट बहुत लंबी है। ये भारत के युवा उद्यमियों और भारत में बन रही नई संभावनाओं का प्रतीक है। मेरा Health Sector के Start&Ups और विशेषकर Ayush Start&Ups से एक आग्रह भी है। आप Online जो भी Portal बनाते हैं, जो भी Content create करते हैं, वो संयुक्त राष्ट्र द्वारा मान्यता प्राप्त सभी भाषाओँ में भी बनाने का प्रयास करें। दुनिया में बहुत सारे ऐसे देश हैं जहाँ अंग्रेजी न इतनी बोली जाती है और ना ही इतनी समझी जाती है। ऐसे देशों को भी ध्यान में रखकर अपनी जानकारी का प्रचार–प्रसार करें। मुझे विश्वास है, भारत के Ayush Start&Ups बेहतर Quality के Products के साथ, जल्द ही, दुनिया भर में छा जायेंगे। साथियो, स्वास्थ्य का सीधा संबंध स्वच्छता से भी जुड़ा है। 'मन की बात' में, हम हमेशा स्वच्छता के आग्रहियों के प्रयासों को जरूर बताते हैं। ऐसे ही एक स्वच्छाग्रही हैं चंद्रकिशोर पाटिल जी। ये महाराष्ट्र में नासिक में रहते हैं। चंद्रकिशोर जी का स्वच्छता को लेकर संकल्प बहुत गहरा है। वो गोदावरी नदी के पास खड़े रहते हैं, और लोगों को लगातार नदी में कूड़ा–कचरा न फेंकने के लिए प्रेरित करते हैं। उन्हें कोई ऐसा करता दिखता है, तो तुरंत उसे मना करते हैं। इस काम में चंद्रकिशोर जी अपना काफी समय खर्च करते हैं। शाम तक उनके पास ऐसी चीजों का ढेर लग जाता है, जो लोग नदी में फेंकने के लिए लाए होते हैं। चंद्रकिशोर जी का ये प्रयास, जागरूकता भी बढ़ाता है, और, प्रेरणा भी देता है। इसी तरह, एक और स्वच्छाग्रही हैं – उड़ीसा

में पुरी के राहुल महाराणा। राहुल हर रविवार को सुबह–सुबह पुरी में तीर्थ स्थलों के पास जाते हैं, और वहाँ plastic कचरा साफ करते हैं। वो अब तक सैकड़ों किलो plastic कचरा और गंदगी साफ कर चुके हैं। पुरी के राहुल हों या नासिक के चंद्रकिशोर, ये हम सबको बहुत कुछ सिखाते हैं। नागरिक के तौर पर हम अपने कर्तव्यों को निभाएं, चाहे स्वच्छता हो, पोषण हो, या फिर टीकाकरण, इन सारे प्रयासों से भी स्वस्थ रहने में मदद मिलती है।

मेरे प्यारे देशवासियो, आइये बात करते है केरला के मुपट्टम श्री नारायणन जी की। उन्होंने एक project के शुरुआत की है जिसका नाम है – Pots for water of life- आप जब इस project के बारे में जानोगे तो सोचेंगे कि क्या कमाल का काम है।

साथियो, मुपट्टम श्री नारायणन जी, गर्मी के दौरान पशु–पक्षियों, को पानी की दिक्कत ना हो, इसके लिए मिट्टी के बर्तन बांटने का अभियान चला रहे हैं। गर्मियों में वो पशु–पक्षियों की इस परेशानी को देखकर खुद भी परेशान हो उठते थे। फिर उन्होंने सोचा कि क्यों ना वो खुद ही मिट्टी के बर्तन बांटने शुरू कर दें ताकि दूसरों के पास उन बर्तनों में सिर्फ पानी भरने का ही काम रहे। आप हैरान रह जाएंगे कि नारायणन जी द्वारा बांटे गए बर्तनों का आंकड़ा एक लाख को पार करने जा रहा है। अपने अभियान में एक लाखवां बर्तन वो गांधी जी द्वारा स्थापित साबरमती आश्रम में दान करेंगे। आज जब गर्मी के मौसम ने दस्तक दे दी है, तो नारायणन जी का यह काम हम सब को ज़रूर प्रेरित करेगा और हम भी इस गर्मी में हमारे पशु–पक्षी मित्रों के लिए पानी की व्यवस्था करेंगे।

साथियो, मैं **'मन की बात'** के श्रोताओं से भी आग्रह करूंगा कि हम अपने संकल्पों को फिर से दोहराएं। पानी की एक–एक बूंद बचाने के लिए हम जो भी कुछ कर सकते हैं, वो हमें जरूर करना चाहिए। इसके अलावा पानी की Recycling पर भी हमें उतना ही जोर देते रहना है। घर में इस्तेमाल किया हुआ जो पानी गमलों में काम आ सकता है, Gardening में काम आ सकता है, वो जरुर दोबारा इस्तेमाल किया जाना चाहिए। थोड़े से प्रयास से आप अपने घर में ऐसी व्यवस्थाएं बना सकते हैं। रहीमदास जी सदियों पहले, कुछ मकसद से ही कहकर गए हैं कि 'रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून'। और पानी बचाने के इस काम में मुझे बच्चों से बहुत उम्मीद है। स्वच्छता को जैसे हमारे बच्चों ने आंदोलन बनाया, वैसे ही वो Water Warrior बनकर, पानी बचाने में मदद कर सकते हैं।

साथियो, हमारे देश में जल संरक्षण, जल स्रोतों की सुरक्षा, सदियों से समाज के स्वभाव का हिस्सा रहा है। मुझे खुशी है कि देश में बहुत से लोगों ने Water Conservation को life mission ही बना दिया है। जैसे चेन्नई के एक साथी हैं अरुण कृष्णमूर्ति जी ! अरुण जी अपने इलाके में तालाबों और झीलों को साफ करने का अभियान चला रहे हैं। उन्होंने 150 से ज्यादा तालाबों–झीलों की साफ–सफाई की जिम्मेदारी उठाई और उसे सफलता के साथ पूरा किया। इसी तरह, महाराष्ट्र के एक साथी रोहन काले हैं। रोहन पेशे से एक HR Professional हैं। वो महाराष्ट्र के सैकड़ों Stepwells यानी सीढ़ी वाले पुराने कुओं के संरक्षण की मुहिम चला रहे हैं। इनमें से कई कुएं तो सैकड़ों साल पुराने होते हैं, और हमारी विरासत का हिस्सा होते हैं। सिकंदराबाद में बंसीलाल –पेट कुआँ एक ऐसा ही Stepwell है। बरसों की उपेक्षा के कारण ये stepwell मिट्टी और कचरे से ढक गया था। लेकिन अब वहाँ इस stepwell को पुनर्जीवित करने का अभियान जनभागीदारी से शुरू हुआ है।

साथियो, मैं तो उस राज्य से आता हूँ, जहाँ पानी की हमेशा बहुत कमी रही है। गुजरात में इन Stepwells को वाव कहते हैं। गुजरात जैसे राज्य में वाव की बड़ी भूमिका रही है। इन कुओं या बावड़ियों के संरक्षण के लिए 'जल मंदिर योजना' ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई। पूरे गुजरात में अनेकों बावड़ियों को पुनर्जीवित किया गया। इससे इन इलाकों में वाटर लेवेल(water level) को बढ़ाने में भी काफी मदद मिली। ऐसे ही अभियान आप भी स्थानीय स्तर पर चला सकते हैं। Check Dam बनाने हों, Rain Water Harvesting हो, इसमें Individual प्रयास भी अहम हैं और Collective Efforts भी जरूरी हैं। जैसे आजादी के अमृत महोत्सव में हमारे देश के हर जिले में कम से कम 75 अमृत सरोवर बनाए जा सकते हैं। कुछ पुराने सरोवरों को सुधारा जा सकता है, कुछ नए सरोवर बनाए जा सकते हैं। मुझे विशवास है, आप इस दिशा में कुछ ना कुछ प्रयास जरूर करेंगे।

मरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' उसकी एक खूबसूरती ये भी है कि मुझे आपके सन्देश बहुत सी भाषाओं, बहुत सी बोलियों में मिलते हैं। कई लोग MYGOV पर Audio massage भी भेजते हैं। भारत की संस्कृति, हमारी भाषाओं, हमारी बोलियाँ, हमारे रहन–सहन, खान–पान का विस्तार, ये सारी विविधताएँ हमारी बहुत बड़ी ताकत है। पूरब से पश्चिम तक, उत्तर से दक्षिण तक भारत को यही विविधता, एक करके रखती हैं , एक भारत–श्रेष्ठ भारत बनाती हैं। इसमें भी हमारे ऐतिहासिक स्थलों और पौराणिक कथाओं, दोनों का बहुत योगदान होता है। आप सोच रहे होंगे कि ये बात मैं अभी आपसे क्यों कर रहा हूँ। इसकी वजह है **"माधवपुर मेला"**। माधवपुर मेला कहाँ लगता है, क्यों लगता है, कैसे ये भारत की

विविधता से जुड़ा है, ये जानना मन की बात के श्रोताओं को बहुत Interesting लगेगा।

साथियो, "माधवपुर मेला" गुजरात के पोरबंदर में समुद्र के पास माधवपुर गाँव में लगता है। लेकिन इसका हिन्दुस्तान के पूर्वी छोर से भी नाता जुड़ता है। आप सोच रहे होंगें कि ऐसा कैसे संभव है? तो इसका भी उत्तर एक पौराणिक कथा से ही मिलता है। कहा जाता है कि हजारों वर्ष पूर्व भगवान् श्री कृष्ण का विवाह, नार्थ ईस्ट की राजकुमारी रुक्मणि से हुआ था। ये विवाह पोरबंदर के माधवपुर में संपन्न हुआ था और उसी विवाह के प्रतीक के रूप में आज भी वहां माधवपुर मेला लगता है। East और West का ये गहरा नाता, हमारी धरोहर है। समय के साथ अब लोगों के प्रयास से, माधवपुर मेले में नई–नई चीजें भी जुड़ रही हैं। हमारे यहाँ कन्या पक्ष को घराती कहा जाता है और इस मेले में अब नार्थ ईस्ट से बहुत से घराती भी आने लगे हैंद्य एक सप्ताह तक चलने वाले माधवपुर मेले में नार्थ ईस्ट के सभी राज्यों के आर्टिस्ट (rtist) पहुंचते हैं, हेंडीक्राफ्ट (handicraft) से जुड़े कलाकार पहुंचतें हैं और इस मेले की रौनक को चार चाँद लग जाते हैं। एक सप्ताह तक भारत के पूरब और पश्चिम की संस्कृतियों का ये मेल, ये माधवपुर मेला, एक भारत – श्रेष्ठ भारत की बहुत सुन्दर मिसाल बना रहा है। मेरा आपसे आग्रह है, आप भी इस मेले के बारे में पढ़ें और जानें।

मेरे प्यारे देशवासियो, देश में आज़ादी का अमृत महोत्सव, अब जन भागीदारी की नई मिसाल बन रहा है। कुछ दिन पहले 23 मार्च को शहीद दिवस पर देश के अलग – अलग कोने में अनेक समारोह हुए। देश ने अपनी आज़ादी के नायक–नायिकाओं को याद किया श्रद्धा पूर्वक याद किया। इसी दिन मुझे कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल में बिप्लॉबी भारत गैलरी के लोकार्पण का भी अवसर मिला। भारत के वीर क्रांतिकारियों को श्रद्धांजली देने के लिए यह अपने आप में बहुत ही अनूठी गैलरी (gallery) है। यदि अवसर मिले, तो आप इसे देखने ज़रूर जाइयेगा। साथियो, अप्रैल के महीने में हम दो महान विभूतियों की जयंती भी मनाएंगे। इन दोनों ने ही भारतीय समाज पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ा है। ये महान विभूतियाँ हैं– महात्मा फुले और बाबा साहब अम्बेडकर। महात्मा फुले की जयंती 11 अप्रैल को, और बाबा साहब की जयंती हम 14 अप्रैल को मनाएंगे। इन दोनों ही महापुरुषों ने भेदभाव और असमानता के खिलाफ बड़ी लड़ाई लड़ी। महात्मा फुले ने उस दौर में बेटियों के लिए स्कूल खोले, कन्या शिशु हत्या के खिलाफ आवाज़ उठाई। उन्होंने जल – संकट से मुक्ति दिलाने के लिए भी बड़े अभियान चलाये।

साथियो, महात्मा फुले की इस चर्चा में सावित्रीबाई फुले जी का भी उल्लेख उतना ही ज़रूरी है। सावित्रीबाई फुले ने कई सामाजिक संस्थाओं के निर्माण में बड़ी भूमिका निभाई। एक शिक्षिका और एक समाज सुधारक के रूप में उन्होंने समाज को जागरूक भी किया और उसका हौंसला भी बढाया। दोनों ने साथ मिलकर सत्यशोधक समाज की स्थापना की। जन–जन के सशक्तिकरण के प्रयास किए। हमें बाबा साहब अम्बेडकर के कार्यों में भी महात्मा फुले के प्रभाव साफ़ दिखाई देते हैं। वो कहते भी थे कि किसी भी समाज के विकास का आकलन उस समाज में महिलाओं की स्थिति को देख कर किया जा सकता है। महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले, बाबा साहब अम्बेडकर के जीवन से प्रेरणा लेते हुए, मैं सभी माता दृपिता और अभिभावकों से अनुरोध करता हूँ कि वे बेटियों को ज़रूर पढ़ायें। बेटियों का स्कूल में दाखिला बढ़ाने के लिए कुछ दिन पहले ही कन्या शिक्षा प्रवेश उत्सव भी शुरू किया गया है, जिन बेटियों की पढाई किसी वजह से छूट गई है, उन्हें दोबारा स्कूल लाने पर फोकस(focus) किया जा रहा है।

साथियो, ये हम सभी के लिए सौभाग्य की बात है कि हमें बाबासाहेब से जुड़े पंच तीर्थ के लिए कार्य करने का भी अवसर मिला है। उनका जन्म–स्थान महू हो, मुंबई में चैत्यभूमि हो, लंदन का उनका घर हो, नागपुर की दीक्षा भूमि हो, या दिल्ली में बाबासाहेब का महा–परिनिर्वाण स्थल, मुझे सभी जगहों पर, सभी तीर्थों पर जाने का सौभाग्य मिला है। मैं 'मन की बात' के श्रोताओं से आग्रह करूँगा कि वे महात्मा फुले, सावित्रीबाई फुले और बाबासाहेब अम्बेडकर से जुड़ी जगहों के दर्शन करने जरुर जाएँ। आपको वहाँ बहुत कुछ सीखने को मिलेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में इस बार भी हमने अनेक विषयों पर बात की। अगले महीने बहुत से पर्व–त्योहार आ रहे हैं। कुछ ही दिन बात ही नवरात्र है। नवरात्र में हम व्रत–उपवास, शक्ति की साधना करते हैं, शक्ति की पूजा करते हैं, यानी हमारी परम्पराएं हमें उल्लास भी सिखाती हैं और संयम भी। संयम और तप भी हमारे लिए पर्व ही है, इसलिए नवरात्र हमेशा से हम सभी के लिए बहुत विशेष रही है। नवरात्र के पहले ही दिन गुड़ी पड़वा का पर्व भी है। अप्रैल में ही Easter भी आता है और रमजान के पवित्र दिन भी शुरू हो रहे हैं। हम सबको साथ लेकर अपने पर्व मनाएँ, भारत की विविधता को सशक्त करें, सबकी यही कामना है। इस बार 'मन की बात' में इतना ही। अगले महीने आपसे नए विषयों के साथ फिर मुलाकात होगी। बहुत–बहुत धन्यवाद !

जन्मशताब्दी वर्ष विशेष

वैचारिकी

शत-शत नमन!

श्रीकुशाभाऊ ठाकरे नैतिकता, आदर्श व सिद्धांतों के प्रकाश स्तंभ थे। वे निष्काम कर्मयोगी थे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी की बुनियाद को मजबूत बनाने में उनका योगदान अमूल्य है। वे जीवनपर्यंत बेदाग रहे। श्री ठाकरे भाजपा के उन नेताओं में से थे, जिन्होंने साइकिल चलाकर और चने खाकर पार्टी का काम किया। यही कारण है कि पार्टी में उनका व्यापक प्रभाव था। श्री कुशाभाऊ ठाकरे का जन्म 15 अगस्त 1922 को मध्य प्रदेश स्थित धार में हुआ था। इनके पिता का नाम सुंदर राव श्रीपति राव ठाकरे और माता का नाम शांता भाई सुंदर राव ठाकरे था। इनकी शिक्षा धार और ग्वालियर में हुई थी। 1942 में संघ का प्रचारक बनने के बाद उन्होंने मध्यप्रदेश के कोने–कोने में निष्ठावान स्वयंसेवकों की सेना खड़ी की। वे कुशल संगठनकर्ता थे। श्री कुशाभाऊ ठाकरे संघ में काम की शुरुआत उस समय की थी, जब इस संगठन का विस्तार व्यापक नहीं था। सच तो यह है कि किसी विचारधारा और लक्ष्य के प्रति उनके समान निष्ठा विरले लोगों में देखी जाती है। उनके सार्वजनिक जीवन को दो हिस्सों में बांटा जा सकता है। वे प्रारंभ में केवल संघ के काम से जुड़े रहे। जनसंघ (अब भाजपा) की स्थापना के बाद उनका संबंध राजनैतिक गतिविधियों से हुआ। उन्होंने अपने–आपको संगठन तक सीमित रखा और संगठन को और मजबूत बनाने के लिए सदैव कार्य करते रहे।

श्री कुशाभाऊ ठाकरे 1956 में मध्य प्रदेश सचिव (संगठन) बने। वे 1967 में भारतीय जन संघ के अखिल भारतीय सचिव बने। आपातकाल के दौरान वे 19 महीने जेल में रहे। 1980 में भाजपा के अखिल भारतीय सचिव बनाए गए। 1986 से 1991 तक वे अखिल भारतीय महासचिव व मध्य प्रदेश के प्रभारी रहे। 1998 में वे भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष बने और इस पद वे 2000 तक रहे। 28 दिसंबर 2003 को उनका देहांत हो गया।

राष्ट्र के प्रति उनका समर्पण अटूट था। इंदौर में एक सम्मान समारोह में उन्होंने कहा कि हमारी सरकार ने तय किया है कि सामने वाले के पास परमाणु बम है, तो हमारा सिपाही तमंचे से नहीं लड़ेगा। हमने अपनी सेना को आधुनिक और आणविक क्षमता से लैस करना जरूरी समझा। हमें पता था कि ऐसा करने पर हमें कमजोर करने का प्रयास किया जाएगा, आर्थिक प्रतिबंध लगाए जाएंगे। उनको लगता है कि ऐसा करने से भारत डूब जाएगा, पर भारत हमेशा ही अपने पैरों पर खड़ा था, खड़ा है और हमेशा खड़ा रहेगा। देश के विकास में लगे 80 प्रतिशत साधन स्वदेशी हैं। विदेशी मदद तो मात्र 15–20 प्रतिशत है। हम सूखी रोटी खा लेंगे, पर पश्चिमी देशों के सामने हाथ नहीं फैलाएंगे। श्री ठाकरे स्वाभिमान पर समझौता करने वाले व्यक्ति नहीं थे, इसलिए वे राष्ट्र का मजबूत और शक्तिशाली देखना चाहते थे।

श्री कुशाभाऊ ठाकरे का मानना था कि किसी राजनैतिक संगठन का उद्देश्य समाज के हर वर्ग की सुख–समृद्धि सुनिश्चित करना है। 7 फरवरी 1999 को भोपाल में श्री ठाकरे ने कहा कि भाजपा का लक्ष्य सिर्फ राजनीतिक सफलता पाना नहीं है। पार्टी का मकसद है कि समाज के सभी वर्गों में सुख और समृद्धि आए। आज जोड़–तोड़ और वर्गों में दरार चौड़ी करके राजनीतिक कामयाबी तो हासिल की जाती है, पर लोगों के दिलों में घर नहीं बनाया जा सकता। भाजपा वे रास्ते कभी नहीं अपनाएगी जो दूसरे दल अपनाते हैं।

श्री कुशाभाऊ ठाकरे जीवन पर्यंत संगठन के लिए कार्य करते रहे। कार्यकर्ताओं से उनका संबंध अटूट था। 19 अप्रैल 1996 को भोपाल में उन्होंने कहा था कि हमारी ताकत हमारे कार्यकर्ता हैं। जनता ने हम पर चुनौतीपूर्ण जिम्मेदारी सौंपी है। जनता को वर्तमान सरकार से बहुत आशा है। ऐसे समय में भाजपा कार्यकर्ताओं का दायित्व बढ़ गया है और हमें अपना दायित्व समझना होगा।

पत्रिका पंजीकरण – RNI-51899/91 डाक पंजीकरण – SSP/LW/NP-117-2021-23
मार्च द्वितीय, अंक 2022 – प्रेषित डाकघर – R.M.S. चारबाग, लखनऊ – प्रेषण तिथि : 26–29 (द्वितीय पाक्षिक)

भारतीय जनता पार्टी के लिए मुद्रक तथा प्रकाशक प्रो. श्यामनन्दन सिंह द्वारा नूतन ऑफसेट मुद्रण केन्द्र, संस्कृति भवन, राजेन्द्र नगर, लखनऊ से मुद्रित व भाजपा कार्यालय, 7, विधानसभा मार्ग, लखनऊ से प्रकाशित। सम्पादक : अरूण कान्त त्रिपाठी